डॉ० शिवगोपाल मिश्र
प्रधानमंत्री, विज्ञान परिषद, इलाहाबाद
के १३ सितम्बर को ७० वे जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

विश्व में हिंदी के प्रचार प्रसार एवं हिंदी प्रेमियों के लिए पूर्ण रुपेण समर्पित

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

से जुडे

१ हिंदी प्रेमियों को प्रतिवर्ष सम्मानित करना
२ हिंदी के प्रेमियों के लिए पत्रिका का प्रकाशन
३ उत्कृष्ट लेखन के लिए महाविद्यालय के माध्यम से कोर्स संचालित करना
४ हिंदी प्रेमियों की रचनाओं को प्रकाशित करना
५ साहित्यकारों के हित के लिए सरकार से मांग

सम्पर्क करें या लिखेः सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–11
कानाफुसीः 09335155949
ईमेलःsahityaseva@rediffmail.com & gokulpublic_society@rediffmail.com

चिट्ठी आई है

आपकी हिन्दी सेवार्थ सक्रियता के लिए धन्यबाद

आदरणीय हिन्दी के लिए प्राणपण से समर्पित सम्पादक जी सादर नमन!

जबसे आपने मुझे 'निराला सम्मान' से सम्मानित किया व जबसे पत्रिका सदस्य बना पत्रिका निरन्तर मिल रही हैं. सम्मान प्रदान करने हेतु तथा देश देश के हर प्रांत के साहित्यकारों से परिचित कराने का अवसर प्रदान करने तथा आपकी हिन्दी सेवार्थ सक्रियता के लिए धन्यबाद हैं. मेरी शुभकामना हैं कि आपके द्वारा सम्पादित विश्व स्नेह समाज पत्रिका दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करते हुए विश्व के हिन्दी साहित्यकारों में परस्पार स्नेह की सुधा-सिक्त वर्षा करे.

हिन्दी की विविध विधाओं से सजी संवरी लोकप्रिय, स्तरीय, समस्त हिन्दी साहित्यकारों को एक मंच पर लाने में अनवरत प्रयत्नशील, विश्व स्नेह समाज पत्रिका हेतु एक रचना प्रेषित कर रहा हूँ.

डॉ० ओमप्रकाश बरसैया
ऊँकार, झांसी, उ.प्र.

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

आपकी संपादकीय सोचने को विवश करती है

आदरणीय सम्पादकजी

आपकी सम्पादकीय सोचने को विवश करती हैं. पत्रिका की अन्य सामग्री भी सुरुचिपूर्ण, पठनीय, मननीय किं वा ज्ञानवर्द्धक है. आज के युग में पत्रिका चलाने का कार्य कुछ दुष्कर-सा होता जा रहा हैं. आपने इस दिशा में कदम बढ़ाकर पत्रिका की पांच वर्ष की यात्रा को सफल बनाया हैं, बधाई और साधुवाद स्वीकारें. आशा है, आपके चरण क्रमिक गति से निरन्तर आगे बढ़ते रहेंगे. मैं पत्रिका के सुखद भविष्य की मंगलमयी कामना करता हूँ. **डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल'**,
चम्पावत, उत्तराचंल

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

पत्रिका अन्य पत्रिकाओं से ज्यादा पठनीय होती जा रही है.

बड़े भाई श्री गोकुलेश्वर द्विवेदी जी
सादर नमन!

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका विश्व स्नेह समाज का प्राप्त होना मेरे लिए खुशी का विषय हैं. भाई साहब आपका ध्यान मुझ अकिंचन पर हैं. यह और भी खुशी की बात हैं. पत्रिका निरन्तर प्राप्त हो रही है. आपकी यह पत्रिका अन्य पत्रिकाओं से ज्यादा पठनीय होती जा रही है. आपका साहित्यिक प्रेम ही है वरना इतनी सस्ती पत्रिका प्रकाशित करना आँधियों में दीप जलाने के जैसा है. आपके व्यक्तित्व व कृतित्व के आगे मैं नतमस्तक हूँ.

आपका अपना
सूर्य नारायण शूर, प्रदेश सचिव,अखिल भारतीय पत्रकार संघ, मेजा, इलाहाबाद

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

आज जरुरत है युवा पीढ़ी जागे

भाई द्विवेदी जी,
सप्रेम नमन्!

काफी समय के बाद आप द्वारा प्रेषित पत्रिका प्राप्त हुई. पुनः याद करने के लिए कोटिशः धन्यबाद. इस अंक में आपने अपने संपादकीय लेख में इन तथाकथित संतो का सच उजागर करने का जो प्रयास किया है व अपने आपमें सराहनीय हैं. समाज का यह कड़वा सच है कि ये कुछ तथाकथित संत-असंतो वाले कार्य कर समाज ही नहीं वरन् सम्पूर्ण हिन्दू समाज को बदनाम कर रहे है. अप्रैल द्वितीय सप्ताह में मैंने भी इस नगर के कुछ साधुवेशधारी महात्माओं का कच्चा चिट्ठा अपने समाचार पत्र 'हिन्दुस्तान' में उजागर किया था. दो साधुवेषधारी जो कि खैराबाद के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल 'भुइंया ताली' पर स्मैक जैसा जहरीला नशा बेचकर समाज को गुमराह कर रहे थे. समाचार प्रकाशन के बाद ये कथित साधु पकड़े भी गए मगर समाज के दूसरे भेड़िए जिन्हें हम आप समाजसेवक या जनप्रतिनिधि के नामों से जानते हैं उन्होने उन्हें छुड़ाने में महती भूमिका अदा की. प्रश्न यह उठता है कि कब तक ये कथित साधु, महात्मा, संत, मौलवी, पादरी बाबा समाज को खोलता करते रहेगें. मेरा अपना तो मत है कि इन कथित लोगों के कारण ही धर्म पतन की ओर जा रहा है. आज जरुरत है युवा पीढ़ी जागे और इन समाज को मुक्त कराये और इन्हें जगाने का सशक्त साहस लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहलाने वाला मीडिया कर सकता है. आपके अन्य लेख भी काफी पंसद आए. शेष फिर पुनः नमस्कार

शरद कपूर, खैराबाद, सीतापुर, उ.प्र.

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

हर कली फूल को,
भंवरों की ठिठोली दे दे
स्नेह सद्भाव-भरी,
रंगो की झोली दे दे
भर दे उल्लास उमंगो,
के सपन से तन-मन
दिल की चाहत है जो,
इस साल की होली दे दे.

मुनीर बख्श आलम, चुर्क, सोनभद्र,उप्र.

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

श्री द्विवेदी जी एवं परिवार
२००६ नये वर्ष में आपका स्वागत है। नूतन वर्ष की यह नव वेला,आपके संकल्पों को पूर्ण करने हेतु आपको मनोबल और शक्ति प्रदान करे। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि नये वर्ष मे आपको एक सुखद और सफल भविष्य प्राप्त हो. नववर्ष आपके लिए सुखद संदेश लाये. नव वर्ष

की हार्दिक शुभकामनांए, मंगल कामनाएं।

डॉ. रामचन्द्र मालवीय,
अनुसंधान अधिकारी, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय,
gksa'kxkckn jksM] Hkksiky] e-iz

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

साहित्यिक पत्रिकाओं के मध्य पत्रिका का एक विशिष्ट स्थान है

बन्धुवर द्विवेदी जी,

सादर नमस्कार!

विश्व स्नेह समाज का निरंतर प्राप्त होते रहे हैं. अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं के मध्य, आपकी पत्रिका का एक विशिष्ट स्थान बन गया है. इसे परिवार के अन्य सदस्य भी पढ़कर आनंद लेते हैं. साहित्यिक रचनाओं के साथ-साथ समाजोपयोगी सामग्री भी पढ़ने को मिलती हैं. साहित्यिक, सामयिक तथा राष्ट्रीय महत्व के समाचारों के साथ मनोरंजन की सामग्री पर मेरी बधाई स्वीकारें. पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए शुभ कामनायें आपका

डॉ. भगवत शरण अग्रवाल,
सम्पादक, हाइकु भारती, अहमदाबाद

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

माननीय सम्पादक महोदय,

नमस्कार।

यह हर्ष व गर्व का विषय हैं कि आपके कुशल सम्पादन एवं सफल संचालन में विश्व स्नेह समाज पत्रिका का बहुत सुचारु रुप से प्रकाशन किया जा रहा हैं. इस सम्बन्ध में कृपया आप हमारी ओर से हार्दिक बधाई एवं अनेकानेक शुभकामनायें सहर्ष स्वीकार करें.

आपके स्नेह की प्रतीक्षा में,

बी.एन.मुद्‌गल, प्रधान सम्पादक,
समाचार संघ, रोहतक, हरियाणा.

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

आदरणीय द्विवेदी जी,

सादर अभिवादन. आशा हैं सर्वविध कुशलता होगी. पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ जिसमें अन्य खबरों के साथ कवि सम्मेलन व गोष्ठी से सम्बधित खबरों को भी पढ़ने का मौका मिला. इसके लिए विशेष आभार. पत्रिका की निरन्तर प्रगति की कामना के साथ शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ. सादर **हेमा उनियाल,**
लोधी कॉलोनी, नई दिल्ली.

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

अंक का विशेष आकर्षक रहा मोती बीए का परिचय

आदरणीय संपादक महोदय,

अभिवादन स्वीकारें!

विश्वास हैं स्वस्थ व सानन्द होगें. अंक के लिए हृदय से आभार. 'देवरिया विशेषांक' के रुप में प्रकाशित अंक में गरीब देश के जनप्रतिनिधियों को मिलने वाली सवैधानिक सुविधाएँ पढ़ कर कोई भी पाठक हतप्रभ हो सकता हैं. लेकिन इतनी भारी भरकम सुविधाओं के बावजूद हमारे जनप्रतिनिधि, नाक-भौंह सिकोड़ते रहते हैं कि उन्हें बहुत कम सुविधाएं प्राप्त हैं. अंक का विशेष आकर्षक श्रद्धेय श्री मोती बीए का परिचय व उनकी रचनाओं का प्रकाशन है. इस स्तुत्य कार्य के लिए आपको साधुवाद! सादर साभार! स्नेहाधीन,

प्रकाश सूना, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

महोदय,

सादर नमन!

पत्रिका को पढ़कर बहुत अच्छा लगा. महोदय आपके द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर किया गया सम्मान समारोह एक सराहनीय कार्य हैं. ऐसे कार्यक्रम लगातार चलते रहे, ताकि नवीन प्रतिभाओं को एक प्रेरणा मिले. आपके द्वारा किये जा रहे ऐसे कार्यक्रमों के लिए आपको साधुवाद, पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ.

डॉ. शिव चौहान, रतलाम, म.प्र.

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

आपकी साहित्य साधना चिरजीवी हो

आदरणीय,

सम्पादक महोदय, सादर नमस्कार

आप द्वारा प्रेषित पत्रिका का जुलाई अंक मिला. किन्हीं कारणों से धन्यवाद प्रेषित नहीं कर पाई. अतः सर्वप्रथम हमारा सस्नेह धन्यबाद स्वीकार करें, आपने पत्रिका में गागर में सागर भरने की कोशिश की है और सफल भी रहे हैं. आपकी साहित्य साधना चिरजीवी हो ऐसी मेरी शुभकामना हैं.

दीपा कुटौला 'अर्पिता', अल्मोड़ा, उत्तरांचल

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

श्रद्धेय दादाजी

सादर प्रणाम

मैं स्मारिका विमोचन व एक कवि सम्मेलन का समाचार भेज रहा हूँ यथा समय उचित स्थान देने की कृपा करें.

विजय कुमार निरंकारी, शाहजहाँपुर

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

आदरणीय द्विवेदीजी,

सादर अभिवादन!

विश्व स्नेह समाज के अंक मिलते रहे है, आभार! कागज थोड़ा ठीक लें, सामग्री ठीक-ठाक आ रही है.

श्याम अंकुर, संपादक, सौगात, मण्डोला वार्ड, बारां

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

आत्मीय मेरे

भोर की प्रथम किरण के उतरते उतरते
सुबह का सबसे पहला प्रेम! प्रणाम!
वसुधैव कुटम्बकम् नित फलित हो 'स्नेह' में
विकसित हो हित -हेतु की सब परियोजनाएं
यह विधि का विधान-मान सच मानना
शतत फुलेगी मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ
स्नेह की नेह फांस में जो-जो फसे हैं
उन-उन सबको मुझ साधारण का सरल सरस स्नेहाभिवादन!

वंशी लाल पारस, भीलवाड़ा, राजस्थान

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

प्रिय पाठक बन्धु

आपके विचार हमेशा मिलते रहे है. अगर आप इसमें कुछ सुझाव व कमियों पर भी अपनी पैनी निगाह डालकर हमें लिखें तो पत्रिका को निखारने में मुझे काफी सहूलियत होगी. संपादक

रिश्वतमेव जयते

भ्रष्टाचार का राष्ट्रीयकरण

✍समाज प्रवाह, मुबई

एक फिल्म का डायलॉग था-महोदय आपके सिद्धात बहुत ही ऊंचे है तो प्रति जवाब में कमेडियन ने कहा- अगर आपको ऊंचे लगते हैं तो आपकी इच्छानुसार नीचे भी कर सकता हूॅ. दर हकीकत आज सिद्धातों पर रेगुलेटर लग गया है उसे चाहे जितना नीचे किया जा सकता है. आज कल ऊंचे और उत्कृष्ट सिद्धातों के बड़े बड़े छोंकदार भाषण जिसमें दुनिया भर के समाजवाद, साम्यवाद, अध्यात्मवाद पूंजी का ट्रष्टीशिप जैसे अनेक 'मिक्सचर' जनता को पिलाए जाते रहे हैं. सबका प्रथम और अंतिम लक्ष्य खुद को श्रेष्ठ बताने का है. "जैसे उसकी कमीज से मेरी कमीज ज्यादा सफेद है." पर हकीकत में देखा जाए तो हर कमीज पर दाग ही दाग हैं और हर कमीज एक ही तरह की गंदी व मैली है. हिन्दुस्तान की तमाम पार्टियों में दिखावे के लिए कार्यक्रम और सिद्धांत अलग अलग होंगे मगर व्यवहार से सबके तौर तरीके भ्रष्टाचार के एक से ही होते हैं. दिखावे के लिए उद्देश्य भी एक से बढ़कर ऊंचे बताऐंगे, गरीब मजदूरों के लिए समाजवादी सिद्धातों का छोंक भी अलग दिखायेगे मगर व्यवहार में भ्रष्टाचार और रिश्वत के मामले में सभी का समान चरित्र है. आजकल अखबारों और टी वी के समाचारों में रोज रोज नये नये घपले, रिश्वत गबन के सामने आ रहे है. गरीब देश को चूना लगाने व खोखला करने वाले ये काण्ड सैकड़ों हजारों करोड़ों के होते हैं. नकली स्टेम्प, पेपर नकली नोट, सरकारी जमीन जायदाद की खरीद बिकरी सड़के इमारते या पुल बनाने के ठेको या फिर सरंक्षण मामले का ही कोई खरीदी बिकरी का मामला हो हर जगह गबन रिश्वत कमीशन का भ्रष्टाचारी बोलबाला मिलेगा. पहले कभी रिश्वत सरकारी कर्मचारियों तक सीमित थी. उसका आकार सैकड़ों हजारों तक सीमित रहा. उसके बाद उससे नेता जुड़े तो मामला लाखों करोड़ों पर पहुंच गया. बात चाहे किसी की नौकरी नियुक्ति का हो या फिर ट्रान्सफर बदली की हो वहां भी रिश्वत लाखों करोड़ो तक पहुंच गई है. उपरान्त देश को चूना लगाने व गिरवी रखने के काम भी धड़ल्ले से होने लगे हैं. तेलगी प्रकरण से तहलका ताबूत तक के सैकड़ों मामले खुल चुके हैं उसमें अब और एक नया मामला सरकारी पेन्शनों के रुप में भी पता चला है. जिसमें भूतिया नाम से मरे हुए लोगों के नाम की पेन्शने भी उठ रही हैं. मतलब कि ऐसे भ्रष्ट्राचार तो केवल हिमशिला की ऊपरी तह मात्र है बाकी जैसे जैसे जांच होती जाएगी नये नये प्रकरण करोड़ों अरबों के खुलते जाएंगे. बी.जे.पी. का अध्यक्ष डेढ़ लाख नकद लेते हुए टी.वी. पर दिखाया गया बचाव में उन भाई का बेशरमी वाला जवाब "रिश्वत लेनी होती तो क्या इतनी मामूली रकम लेता? ये तो पार्टी फण्ड का रुपया है." रिश्वत में नेता पकड़ा जाता है तो वह पार्टी फण्ड बता देता है अन्यथा वह उसका निजी धन बन कर विदेशी बैंको में जमा हो जाता है. यहां भी बेनामी संपति की तरह धंधे व्यापार में घूमते रहता है. मतलब कि पार्टी के नाम पर लाखों करोड़ो की रिश्वत निजी बन जाती है. हर नेता चुनाव जीतने के बाद मिनीस्टरी के लिए ब्लेकमेंलिंग करते हुए देखा जाता है. मुझे तो वही खाता (विभाग) चाहिए अथवा तो अमुक "मलाई" दार विभाग चाहिए वह मलाईदार ही खुली रिश्वत है. वह मलाई क्या है सभी अच्छी तरह जानते हैं. उस पर जनता का ध्यान क्यों नही जाता? क्यों ऐसे बेईमानों को चुनती है? केवल जाति धर्म के नाम पर ऐसे बईमानों को चुनकर ईमानदारों के प्रति अन्याय करती है. तब भ्रष्टाचार मिटे कैसे?

लोग दलील की तौर पर यह अनुमान भी लगाते है कि सरकारी कर्मचारी के वेतनमान काफी कम है. खासकर पुलिस आदि की. रिश्वत के पीछे उनके वेतन मान को कारण मानते हैं. परन्तु पिछले अनेक वर्षो से वेतनमान बहुत सुधरा है फिर भी रिश्वत की बेईमानी तो चालू ही है. दूसरा कारण लोकशाही की वर्तमान चुनाव पद्धति जिसमें अनेक बदियां है पहली तो जरुरत से ज्यादा खर्च द्वारा प्रचार व खैरात बांटते है, दूसरी जातिगत तथा धार्मिक द्वेष भावना, भड़काने की, तीसरी मतदान पद्धति की जिसमें कुल मतदाताओं का प्रतिनिधित्व नहीं देखा जाता. जीतने वाले को केवल एक मत अधिक मिलने पर विजयी घोषित कर दिया जाता है. मतदान क्षेत्र के कुल मतदाता चाहे जितने ही हो, कम से कम मतदान होने या अधिक उम्मीदवारों में मत विभाजन होने के कारण जीतने वाले प्रतिनिधी को प्राप्त कुल मतदाताओं की सख्या के पांच प्रतिशत से कम रहने पर भी उसे विजयी घोषित कर दिया जाता है. शिवाय वस्तुएं बांटने से लेकर बूथ क्रेपचरिंग माफियागिरी का भी सहारा लिया जाता है तब ऐसे चुनाव को जनतंत्र का या जनता का प्रतिनिधित्व

कैसे कहा जा सकेगा? यहां भी बात चुनावी भ्रष्टाचार से अधिक इन्सानी नीयत की अधिक होती है. पहली बात तो चुनाव में उम्मीदवार अधिक खर्च किस उम्मीद से और क्यों करता है? इसी में उसकी बेईमानी स्पष्ट हो जाती है. फिर जीतकर उस रकम से अनेक गुना अधिक की वसूली की बावत ही तो आज का भ्रष्टाचार है. फिर उसके भ्रष्टाचार के शिकार सरकारी कर्मचारी जो अपनी नियुक्ति के लिए हजारों लाखों की रिश्वत दिया करते हैं यहां तक कि चपरासी, कण्डक्टर, मास्टर, क्लर्क आदि सभी की नियुक्ति के बदले रिश्वत तय है. वैसी नियुक्ति पश्चात उनका आशय उस रिश्वत को जीवन भर वसूलने का ही होता है. इस तरह रिश्वत बेईमानी का चरित्र ताजिन्दगीं स्वभावगत हो जाता हैं. अब तो जनता भी उसकी आदी हो चुकी है. जिसके पीछे का वेतनमाल नहीं नीयत और चरित्र की गिरावट कहा जाएगा. उस रिश्वत में चाहे जैसे अपराध छुपाये जा सकते है. खान-पान की मिलावट बेईमानी से काला बाजारी से लेकर हत्या, बलात्कार, लूट आदि के अपराध से लोग छूट जाते है. अब के जमाने में रिश्वत ही रिश्वत की दवाई है. "लोहे से लोहा कटे"यही तथ्य प्रमाण रिश्वत देकर बंद हुआ तो रिश्वत देकर छूटा. रिश्वत से आज कोई भी कर्मचारी या विभाग मुक्त नहीं है इसलिए जनता को देना मजबूरी है वरना काम नहीं होगा. अपवाद केवल प्रमाण का ही मिलेगा जिसकी जड़ में चुनाव पद्धति भी एक कारण है.

१९३६ के प्रथम राष्ट्रीय चुनावों में साने गुरुजी (पाण्डुरंग सदाशिव साने) जिन्हें खानदेश (महाराष्ट्र) से कांग्रेसी प्रतिनिधी के रुप में उम्मीदवार बनाया गया. प्रथम तो उन्होंने "मेरे पास रुपया नहीं है तो चुनाव कहा से लड़ूंगा?" तब चुनाव में सैकड़ों रुपये से ही काम चल जाता था पर पार्टी का आग्रह था इसलिए उनके नाम से चुनाव फण्ड के बक्से मंदिरो व चौराहे पर रखे गए. जिसमें जनता ने इतना धन दिया कि उससे पार्टी ने समग्र खानदेश का चुनाव लड़ा लिये. कहां है ऐसे समाजसेवी या जनप्रतिनिधि? सही लोकतंत्र उसे कहते है जिसमें जनता अपना प्रतिनिधि स्वयं चुनती है. आज तो पार्टियों द्वारा बईमान उम्मीदवार थोपे जाते हैं.

१९३६ के विधानसभा चुनावों में बिहार के महुवा फतेहपुर क्षेत्र से कांग्रेसी उम्मीदवार दीपनारायण सिंह गरीब थे जिनके सामने बड़े जमीनदार श्यामनंदन सहाय खड़े हुए थे. उस जमाने में साईकिल की कीमत मात्र १६ रुपये थी पर उसकी शान किसी मोटर कार से कम नहीं होती थी. उन्होंने थोकभाव से १४ रु० में एक सायकल खरीदकर करीब २०० साईकिले बांटी थी अपने प्रचार में जीपों का काफिला रक्खा था और मतदान करने वालों को जलेबी पूड़ी का भोजन भी कराया था. उनके सामने खड़े होने वाले दीपनारायण के पास चप्पल भी फटी हुई थी. यह थी मतदाताओं की अपनी ईमानदारी. जब मतदाता ही भ्रष्ट हो तो उनकी पसंद भ्रष्टाचारी ही बनेगें.

१९५२ के प्रथम चुनावों में बिहार के चंपारण मधुवन क्षेत्र में ब्रिजकिशोर शर्मा नाम के सज्जन खड़े हुए जिन्होंने कार्यकर्ताओं को १८ साईकिले बांटी, मामला प्रथम दृष्टी से छोटा लग सकता है परंतु भ्रष्टाचार तो था ही. प्रथम चुनाव में ही उन्होंने ऐसी मिसाल बना लीं तो बाद में वही खैरात पद्धति जहां पहुंची है उसी की चिन्ता हमारे लिए भ्रष्टाचार का मुद्‌दा बना हैं.

केन्द्र में वर्षो तक मंत्री मण्डल में रहने वाले बाबू जगजीवन रामजी ने भी अपने चुनाव क्षेत्र सासाराम में साईकिलों की मुफ्त सौगात बांटी थी. मामला अखबारों में छप कर रह गया. कौन किसकी जांच या शिकायत करता? हमाम में सभी नंगे है.

ऐसा ही एक चुनाव १९५२ में राजस्थान के जोधपुर क्षेत्र का था जहां से कांग्रेस के साधारण आर्थिक स्थिति के बड़े नेता जयनारायण व्यास खड़े किए गए जिनके पास भी कोई साधन या धन नहीं था. सामने खड़े थे मारवाड़ रियासत, जोधपुर के राजा हणमंतसिंहजी भले ही वे चुनाव अपने साधन बल से जीत गये परन्तु व्यासजी की सेवा ईमानदारी को कैस भुलाया जा सकता है.

१९५२ के प्रथम चुनाव के वख्त तक कोई चुनावी फण्ड किसी भी पार्टी के पास नहीं था इसलिए हर पार्टी अपने चुनाव के लिए कार्यकर्ताओं को कूपन देकर चुनाव निधि इकट्ठा किया करती थी. यह सिलसिला सत्ताधारी कांग्रेस ने दूसरे आम चुनाव तक तो चलाया परन्तु उसके बाद बड़ी पार्टियों के ध नवानों व उद्योग घरानों से चंदे के रुप में बड़ी रकमें ली जाने लगी जिसके बदले में उन्हें व्यवसायिक लाभ दिया जाने लगा. उदाहरण के तौर पर स्कूटर के लिए केवल बजाज घराने का, कारों के लिए बिर्ला एवं बालचंद समूह को तो जीप के लिए महेन्द्र ग्रुप को मोनोपोली दी गई, जिससे उन्हें बेखटके ब्लेक की सुविधा रहती है. उसी का कुछ हिस्सा बतौर चुनाव फण्ड के सत्ताधारी पार्टी को दिया करते थे. इस चुनावी फण्ड के बदले में कई पार्टियों ने तो धनवानों को लोकसभा की आसान सुरक्षित सीटों

पर से उम्मीदवार बनाया या राज्यसभा की सदस्यता तक बेचने का काम शुरु कर दिया. जो आज भी जारी है. अब तो ग्लेमर के नाम बिना सेवा चरित्र के अभिनेता अभिनेत्रियां खड़ी हो जाती है. कई को राज्यसभा की सदस्यता तो कई को मंत्रीपद भी दिया जाने लगा है. आज कल धन फिल्म एक्टरों के पास बहुतायत से मिलेगा इसलिये वे भी अपनी राजनैतिक हैसियत का दबदबा चाहते है ताकि कोई उनको उंगली नहीं लगा सके. बाकी उनका जिनका काम सेवा की आड़ में केवल एक्टिंग करना होता है. लोकतंत्र का ऐसे अवमूल्यन ने ही जनता का विश्वास तोड़ा है. प्रथम चुनाव में चुनाव आयोग का सारे देश का चुनावी खर्च १० करोड़ ४५ लाख ४७ हजार आया था. इसी तरह उम्मीदवार का भी चुनावी खर्च प्रमाण में काफी कम था. उसकी तुलना में आज का चुनावी खर्च सैकड़ों गुना अधिक बढ़ गया है. एक उदाहरण जार्ज फर्नाडिज का जो १९७७ के चुनावों में जेल में थे. जनतापार्टी ने उन्हें चुनाव का टिकट दिया जिनके लिए खुद जयप्रकाश जी ने मतदाताओं को मत देने की अपील की थी. वह चुनाव बहुत ही मामूली खर्चे से सम्पन्न हुआ और जनता ने उन्हें भारी मतो से विजयी बनाया. वही जार्ज फर्नाडिज बाद के १९८० के चुनावों में जब खड़े हुए तो अपने मतदान क्षेत्र में ट्रके भरकर, साईकिलें, स्कूटर, बनियान, तौलिए आदि बांट कर चुनाव लड़े थे. जिसके कारण मामला अदालत में गया. बाद में क्या हुआ मामला चला, दवा या बिना सबूत के समाप्त हुआ?

चुनावी खर्च में वृद्धि एवं चुनावी फण्ड के नाम दी जाने वाली रिश्वत को लेकर कुछ लोगों ने मुंबई हाईकोर्ट में जनहित याचिका दाखिल कर दी थीा. तब के मुंबई हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति ने विषय की गंभीरत को देखते हुए अपने निर्णय में टिप्पणी की थी

“कंपनियों द्वारा दिये जाने वाले चुनावी फण्ड को लेकर संसद को गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए अगर संसद ने इस बारे में गंभीरता पूर्वक विचार नहीं किया या उसे रोकने के लिए कानून नहीं बनाया तो आने वाले दिनों में देश की लोकशाही के लिए घातक सिद्ध होगा.” न्यायमूर्ति द्वारा की गई टिप्पणी बहुत कुछ कह जाती है परन्तु उस पर कार्यवाही किसी भी पार्टी ने नहीं की. १९५७ के बाद शुरु हुआ बड़ी कंपनियों द्वारा दिया गया बड़ी रकमों का चुनावी फण्ड अब “मनीपावर” और उसी से खरीदा या संरक्षित “मंसल पावर”, गेंग पावर राजनीति का चुनावी आधार बन गया है. सिर्फ चुनावों में हीं नही बल्कि धन प्रलोभन द्वारा दलबदल के लिए भी यह मनी पावर निर्णायक हो गया है. १९६९ में जब कांग्रेस का विभाजन हुआ तक किसी अखबार में छपा था कि किस बड़े उद्योग घराने के कितने विश्वसनीय सांसद हैं? उसमें बिर्ला समूह के करीब ८० सदस्यों का उल्लेख था जो किसी भी सरकार को बनाने बिगाड़ने की क्षमता रखते थे और उन्होंने तब पार्टी व सरकार को तोड़ कर दिखाया भी. इसी तरह दूसरी पार्टियों का भी था जिन्होंने सरकार बनाने का निर्णायक भूमिका अदा की थी. आज उसी मनीपावर से सरकारें बनाई व तोड़ी जाती है. समूह में थोक दलबदली कराना एक आम बात बन गई हैं. पिछली १९९१ की नरिसंहराव की अल्पमत सरकार ने झारखंड मुक्ति मोर्चे का समर्थन लेने के लिए ५ करोड़ की रिश्वत दी थी. वह मामला अभी भी लंबित है. हर्षद मेहता ने एक करोड़ की रिश्वत देने का खुला जिक्र टी वी पर किया था. वे सभी मामले दबा दिये गए. और अब तो नरसिंहराव व अन्य साक्षियों के मरजाने से मामला स्वयं ही समाप्त हो सकता है. हमाम में सभी नंगे है इसलिए कोई पार्टी इस तरह के चुनावी या पार्टी फण्डों पर रोक लगाना नहीं चाहती. उलटा राजनैतिक पाटीयों को दिये गये चंदों पर से तमाम रोक हटा ली गई है और उनके हिसाबों की कोई जांच तक नहीं होती. इंकम टैक्स कानून १३(१)के अन्तर्गत उसे पूर्णतया कर मुक्त कर दिया गया है. अब तो देशी उद्योग घरानों के अलावा मल्टीनेशनल कंपनियां और अन्य विदेशी ताकतें भी प्रत्यक्ष या परोक्ष में हमारे चुनावों को प्रभावित करने लगी हैं. उन सबके पीछे एक मात्र कारण चुनावी फण्ड हैं परंतु वह भी अधिकांश मात्रा में केवल सत्ताधारी पार्टी को ही मिला करता है. इसलिए बाकी पार्टियां अपने लिए चुनावी फण्ड प्रत्यक्ष परोक्ष जहा ंभी राज्य या महानगर पालिकाओं पंचायतों में सत्ता पर होती है वहां से रिश्वत के माध्यम से धन इकट्ठा किया करती है. इसमें कोई भी पार्टी बाकी नहीं है. इसलिए भ्रष्टाचार के विरुद्ध कोई भी प्रभावी आवाज नहीं उठती “तेरी भी चुप और मेरी भी चुप” इस आधार पर सभी एक मत हैं. इस धन के लिए चुनावों में मतदाताओं को दिये जाने वाली खैरात, वस्तुएं, नकद या शराब से लेकर प्रचार काम पोस्टर्स, रैलियां, हेलिकाप्टर, विमान यात्राएं आदि का समावेश होता है. उन सभी को पता है कि हर किसी माध्यम से चुनाव जीता जए फिर तो रुपया ही रुपया है उनकी पौ बारह हैं. शेष पृष्ठ २७ .....पर

महादेवी वर्मा के जन्मशताब्दी वर्ष के शुभारम्भ के अवसर पर जिस प्रकार स्वनामधन्य कवयित्रि-स्मरणीय हैं, उसी प्रकार उनके रचे पात्र भी स्मरणीय हैं जो साहित्यकारों, लेखकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों के मन में बसे हैं. महादेवी जी का पद्य और गद्य दोंनो पर समान अधिकार हैं. प्रसाद जी की तरह वे भी पद्य में अपना परिचय स्वयं कुछ इस प्रकार देती है-

मैं नीर भरी दुख की बदली; और अपने शैशव के अभिन्न रामा का परिचय कुछ इस प्रकार-'रामा आज भी सत्य हैं, सुन्दर हैं, स्मरणीय हैं. उनके अतीत में खड़े रामा की विशाल छाया वर्तमान के साथ बढ़ती ही जाती हैं-निर्वाक् निस्तन्द्र, स्नेह-तरल.

आपने हिंदी साहित्य की गद्य-विद्या को संस्मरणों की सतरंगी आभा से सजाया हैं. उनकी स्मृति के जीवित चित्र भाषा और शैली की नयी रंगत में निभज्जित हैं. उनकी रंगत पाठक के अन्तर्मन में लम्बें अरसे तक जीवित रहती हैं. अपने सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति का शब्द चित्र वे इस तरह प्रस्तुत करती हैं कि लगता हैं उस व्यक्ति विशेष ने सभी के साथ तादात्म्य स्थापित कर लिया हैं. एक तरफ उनके अभिन्न पथ के साथी हैं और दूसरी तरफ भक्तिन चीनी फेरी वाला गुंगिया रामा फीसा तथा लक्ष्या हैं और दूसरी ओर रवीन्द्र नाथ ठाकुर, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद और सियाराम शरण गुप्त हैं. भक्तिन उनके साथ छाया की तरह रहती हैं.

भक्तिन के जीवन का कारूणिक परिच्छेद पॉच वर्ष की आयु से ही प्रारंभ हो जाता हैं. नन्हीं सी जान हंडिया ग्राम के सम्पन्न गोपालक की सबसे छोटी पुत्र-वधू बनने के बाद विध ावा बहू की यातना सहन कर कलो गुड़ की डली के साथ मठ्ठा पीने के बाद वह आक्रामक बन कर दूसरे विवाह का विरोध जिस उग्रता से करती हैं, उसकी तह तक केवल महादेवी ही पहुंच सकती हैं. 'हम कुकुरी बिलारी न होय, हमारा मन पुसाई तौ हम दूसरा के जाब नाहिं तुम्हार पच्चे के छाती पै होरहा यूजब और राज करब समुझै रहौं.' शायद किसी को विश्वास भी नहीं होगा कि वही भक्तिन महादेवी के दिल पर राज करने लगेगी.

'हमार मलिकन तौ रात दिन कितबियन मॉ गड़ा रहित. अब हमहूँ पड़ै लागव तौ घर गिरिस्ती कउन देखी-सुनी.'

किसी के लम्बे बाल और अस्त-व्यस्त वेशभूषा देखकर वह कहती 'का ओहू कवित लिखै जानत है, और अवज्ञा शुरु हो जाती. तब उ कुच्छौ करिहै-ध ारिहैं नाहि, बस गली गली गाउत बजाउत फिरि हैं.'

उनके शिल्प की दूसरी विशेषता है कि पात्र एवं व्यक्तित्व अनुरुप वे भाषा के एक-एक वर्ण शब्द को कुशल कुम्भकार स्वर्णकार की तरह गढ़ती चली जाती हैं. इनके पास शब्दों का अक्षय कोष है जो हमेशा उनकी कलम की नोक पर विराजमान रहता है. उनका कहना है, 'मुझे चीनियो में पहचान का स्मरण रखने योग्य विचित्रता कम मिलती है. कुछ समस्त मुख एक ही सॉचे में ढले से जान पड़ते हैं. कुछ तिरछी अध ाखुली और विरल मूरी बरुनियों वाली ऑखों की तरल रेखाकृति देखकर भ्रान्ति होती है कि वे सब एक नाप के अनुसार किसी तेज धार से चीर कर बनायी गयी हैं.

चीनी भाई की वेदना और पीड़ा वा

बखान वे इस प्रकार करती है-सबके खाने के पात्र से बचा उच्छिष्ट वह हरी ऑखों वाली काली बिल्ली के साथ मिलकर खाता था.

कुत्ते के पिल्ले के समान ही वह घुटनों के बल खड़ा रहता और हॅसने रोने की विविध मुद्राओं का आभास करता.

रवीन्द्र नाथ ठाकुर को प्रणाम करते हुए उनकी कलम कहती है-' कवीन्द्र रवीन्द्र उन साहित्यकारों में से थे जिनके व्यक्तित्व और साहित्य में अद्‌भुत साम्य हैं. जहॉ व्यक्ति को देखकर लगता हैं मानों काव्य की व्यापकता ही सिमट कर मूर्त हो गई हैं और काव्य से परिचित होकर जान पड़ता है मानों व्यक्ति ही तरल होकर फैल गया हैं.

मैथिलीशरण गुप्त के लिए वे जिस भाषा का प्रयोग करती है वह इस प्रकार है, गुप्त जी के बाहय दर्शन में ऐसा कुछ नहीं है जो उन्हें असधारण सिद्ध कर सके. साधारण मझोला कद, साधारण छरहरा गठन, साधारण गेहुंआ रंग, साधारण पगड़ी, अंगरखा, धोती या उसका आधुनिकी संस्करण भारतीयता से सीमित साम्प्रदायिकता का गठनबंधन सा करती उनकी तुलसी कंठी.

सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन को वे केवल एक ही वाक्य में समेट लेती है. जिसे पढ़ने के बाद मौन होने के

सिवाय कुछ कर ही नहीं सकता. जिस विवाह में मंगल-कंकण ही रणकंकण बन गया हो उसकी गृहस्थी भी कारागार में ही बसाई जा सकती थी. संक्षिप्तता का यह अद्भुत उदाहरण हैं.

वही वे अपने भाई निराला की मार्मिक झांकी इन शब्दों में करती हैं-“दिन, रात के पगों से वर्षो की सीमा पार करने वाले अतीत ने आग के अक्षरों में ऑसू के रंग भर-भर कर ऐसी अनेक चित्र-कथांए ऑक डाली हैं, जिनमें इस महान कवि और असाध ाारण मानव के जीवन की मार्मिक झॉकी मिल सकती हैं.”

न केवल व्यक्ति विशेष बल्कि स्थान विशेष के चित्र प्रस्तुत करने में महादेवी माहिर हैं. उनकी बैठक में ऐसा कुछ नहीं दिखाई दिया जिसे सजावट के अन्तर्गत रखा जा सके. कमरे में एक साधारण तख़्त और दो तीन सादी कुर्सिया, दीवाल पर दो-तीन चित्र, अलमारी में कुछ पुस्तकें. जहॉ स्थान है, वहॉ व्यक्ति भी. प्रसाद जी की जन्म कुंडली के कुछ प्रकार पढ़ती है-उन्होंने एक सम्पन्न पर ऋण ग्रस्त प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लिया. कभी-कभी उनके शब्दों में वेदना का अजस प्रवाह बहता है. जिसमें मानव मूल्य डूबते दिखाई देते हैं.

पर जीवन और मृत्यु के संघर्श का यह रोमांचक पृष्ठ हमारे मन में एक जिज्ञासा की पुनरावृत्ति करता है. क्या इतने बड़े कलाकार का कोई ऐसा अंतरंग मित्र नहीं था जो इस अर्न्तद्वन्द के बीच में खड़ा हो सकता?

कभी कभी वे चित्रांकन से पहले अपनी संक्षिप्त टिप्पणी जरुर दे देती है. जैसे “सत्य है, हीरे को बहुमूल्य मान लेने पर उसका कौन सा खंड बहुमूल्य माना जाएगा?”

“लहर जब तर से टकराती है तब वहीं बिखर कर और समाप्त होकर अपनी यात्रा का अंत कर लेती है. ”

“मनुष्य को संसार से बांधने वाला विधाता मां ही हैं.”

“पुरुष का जीवन संघर्ष से आरंभ होता है और स्त्री का आत्म समर्पण से.”

“श्रृंखला की कड़ियों” में उनका गद्य बदले-बदले रुप में दिखाई देता है. नारी ने अपनी शक्ति को कभी जाना और कभी नहीं जाना. वर्तमान युग तो उसके न जानने के करुण कहानी है. उसके आज के और अतीत के बलिदानों में इतना ही अन्तर है जितना स्वेच्छा से स्वीकृत नारीत्व की गरिमा से गौरववती के जौहर व्रत और बलात् लाठियों से घेर घार कर बलिपशु के समान झोंकी जाने वाली नारी के अग्नि प्रवेश में.

अन्त में मैं यही कहना चाहूंगी कि महादेवी का गद्य शिल्प वैविध्य लिए हुए है. कभी उसमें सौम्य करुण स्नेहिल, चित्र दिखाई देते हैं और कभी वेदना आक्रोश स्पष्टता एक तीखापन. आज यदि वे कुशल चितेरी इस धरा, धाम पर अवतरित होती तो उन्हें लगता कि यहॉ सब कुछ वैसा ही है. अकेलेपन के इस घने जंगल में कोई भी अंतरंग मित्र नहीं हैं, जिसके सामने अपने दिल की परत खोली जा सकें.

जी-२३३, प्रीत विहार, दिल्ली-११००९२

आवश्यकता हैं

हिन्दी मासिक **विश्व स्नेह समाज** हेतु भारत के विभिन्न क्षेत्रों मे *संवाददाता, ब्यूरो, एजेन्ट,विज्ञापन प्रतिनिधियों की.*

हिन्दी साप्ताहिक **द हंगामा इंडिया** हेतु उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों **संवाददाता, ब्यूरो, एजेन्ट, विज्ञापन प्रतिनिधि** कार्य करने के इच्छुक व्यक्ति जबाबी लिफाफे के साथ लिखें:

नारी के बदलते संदर्भ व हिन्दी कथा साहित्य

डॉ० वीरेन्द्र सिंह यादव

आज भारत में व्यक्ति और समाज दोनों एक विशिष्ट संक्रमण प्रक्रिया से गुजर रहे है. हमारी सामाजिक तथा वैयक्तिक मर्यादायें महान परिवर्तन के दौर से गुजर रही है. परिवर्तन के इस इस आरोह-अवरोह ने हमारे जीवन में अनेक स्वस्थ-अस्वस्थ सम्भावनाओं ने दस्तक देनी शुरु कर दी है जो साक्षात हमारे जीवनगत मूल्यों एवं मान्यताओं को भी प्रभावित कर रहे हैं. नारी जीवन भी इससे अछूता नहीं हैं. नारी स्वतन्त्रता और अस्मिता का प्रश्न आज हमारे समक्ष सबसे ज्वलंत (यक्ष) प्रश्नों में एक हो गया है. हमें यह सोचने पर मजबूर होना पड़ रहा है कि हमारी पुरानी मान्यताओं और सत्ताओं के विखण्डित होने में कही क्या आज आधुनिकता आड़े आ रही है. यदि हॉ तो आधुनिकता के विकास के साथ नारी मुक्ति आन्दोलन ने इस सवाल की अपनी अर्थवत्ता और प्रासंगिकता बढ़ा दी है. यह सच है कि शीत युद्ध और समाजवादी सत्ता के विघटन के बाद पूजीवांद और बाजारवाद तथा भूमण्डलीकरण ने नारी अस्मिता, मुक्ति, स्वतंत्रता के इन प्रश्नों की अपनी तरह की नई व्याख्या प्रस्तुत की हैं.

मैक्सिम गोर्की ने एक स्थान पर लिखा है कि मनुष्य के लिए सर्वोत्तम मनुष्य स्वयं है. अतः प्रत्येक रुप में उन सम्पूर्ण परिस्थितियों का अंत कर देना ही अभीष्ट होना चाहिए, जिसके द्वारा मनुष्य प्रताड़ित, षोशित, हेय एवं अपमानित होता रहता है. गोर्की साहब का यह कथन आज के परिप्रेक्ष्य में बारह आने सत्य प्रतीत हो रहा है और इसके कारण ही सम्पूर्ण मानव जाति को यह पशुतर बना रही है. वर्तमान समाज में जो आपसी (स्त्री-पुरुश) द्वन्द चल रहा है उसमें मानवीय संवेदनायें सवलित होती चली जा रही हैं. नारी मुक्ति आन्दोलन, नारी स्वतंत्रता, नारी जागरुकता, नारी शिक्षा के प्रसार-प्रचार एवं सब प्रकार की जागरुकताओं के भाषणों के बाद आज खुली धूप में पुरुषों में स्वार्थो का चश्मा चढ़ा हुआ है और नारी शोषण और भी अमानवीय तथा क्रूर होता जा रहा है.

हिन्दी कथा साहित्य के लिए यह चिन्ता कोई नयी नहीं हैं क्योकि हिन्दी साहित्य के पहले-पहले उपन्यास 'परीक्षागुरु' से नारी अस्मिता विषय संवेदनशील एवं चिन्ता का विषय रहा है परन्तु इसके निराकरण की जगह करुणा एवं सहानुभूति का भाव अधिक झलकता है.इसक कारण यह था कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक नारी मुक्ति जैसी बात करना कल्पना की श्रेणी में मानी जाती थी. इस समय नारी पर होते अत्याचारों का विरोध, आर्य समाज, ब्रहमसमाज, थियोसोफिकल सोसायटी एवं प्रार्थना समाज के माध्यम से हो रहा था, परन्तु एक सीमा तक षायद जनमानस में व्याप्त जड़ता को तोड़ना उनका पहला काम था और इसमें उन्हें पर्याप्त सफलता भी मिली. बाल विवाह, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, सती प्रथा एवं अन्य विवाहोपरांत उत्पन्न समस्याओं के निराकरण के लिए एक संगठन का सहारा लिया. स्वाभाविक हैं इसके पक्ष में जनमत बनी और लोगों की जड़ता टूटी सोच बदली, साथ ही जो असम्भव था, वह सम्भव दिखाई पड़ने लगा.

भारतेन्दु युगीन कथा साहित्य में लेखकों ने जिस तरह की आदर्श स्थिति नारी की बना रखी थी वास्तव में आज की स्थिति में एक कल्पना मात्र ही मानी जायेगी. यहॉ पर स्त्री-पुरुष की समानता पर विशेष बल दिया गया था. हॉलाकि इस युग के कथाकारों को दोहरा संघर्ष झेलना पड़ रहा था. एक ओर तो अपने सामाजिक संस्कारों से और दूसरी ओर अंग्रेजी सभ्यता से पैदा हुए खतरों से. इसका प्रमुख कारण यह हुआ कि इन कथाकारो ने पतिव्रता स्त्री और एक पत्नी व्रत की नवीन व्याख्या करके सांमती-संस्कारो में घुटती विवश नारी को बचा लिया. इस स्थिति से निकलने के बाद जैसे ही नारी घर की देहरी से बाहर आई, तब उसकी स्थिति पहले से बेहतर हुई उसे अपने अस्तित्व का वजूद महसूस हुआ, साथ ही बाहरी वातावरण के प्रति उसे सफलता भी मिली. इन स्थितियों के बीच एक गम्भीर समस्या साल रही थी, वह थी आर्थिक आधार, क्योंकि बिना आर्थिक रुप से शसक्त हुए संघर्ष की कल्पना करना बेवकूफी भरा कार्य था और उसे ऐसी परिस्थितियों के बीच तालमेल भिड़ाना पड़ा. तभी तो 'सेवासदन' की पात्र सुमन बेइया बनने पर मजबूर हो जाती है. इसलिए घर से निकाले जाने पर उसका दूसरा कोई आधार नहीं था. आधारहीन सुमन के सामने घृणित जीवन अपनाने के अलावा और कोई विकल्प भी नहीं था. प्रेमचन्द्र अपनी सोच के मुताबिक हॉलाकिं उसे नारी सुधार गृह में भेज देते हैं परन्तु इसे

अन्तिम फैसला कतई नहीं माना जा सकता है क्योंकि इससे नारी का व्यक्तित्व और भी घुटता है.

सत्यता यह है कि इस समय नारी समस्या पर जिसने जब जहॉ भी लिखा, वह भावुकता से भरकर ही लिखा और स्वाभाविक है कि भावुकता से लिखा गया कोई भी सृजन करुणा का रुप ले लेता है. इस युग के लेखकों ने नारी को कभी भी हाड़मांस की स्त्री के रुप में स्वीकार नहीं किया, या तो उसे पूजा की वस्तु समझा या भोग की वस्तु. प्रेमचन्द्र जैसे चेतना सम्पन्न लेखक का भी यही हाल था, क्योंकि प्रेमचन्द सामाजिक परिस्थितियों की विकरालता को देखकर धीरे-धीरे यर्थाथवाद की ओर मुड़ते नजर आते हैं परन्तु उनका नारी के प्रति आर्य समाजी मन गच्चा खाता नजर आता है. एक मित्र से आपने-इस पीड़ा को स्वीकार भी किया था -'मेरा नारी का आदर्श एक ही स्थान पर त्याग, सेवा और पवित्रता का केन्द्रित होना है.' स्वाभाविक है यहॉ पर प्रेमचन्द्र नारी को आर्थिक आधार पर स्वालम्बी न बनाते हुए उसे सनातनी सजी संवरी देवी बनाने की छवि प्रदान करते हैं, जिसमें विश्व के सम्पूर्ण गुणों को समावेश्स हो, साथ ही वह पुरुष की नित सेवा करे, हर विपत्ति में अपने आदर्श के तहत सम्पूर्ण त्याग का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहानी 'कफन' की बुधिया की तरह महामृत्यु का वरण करे, वहीं पुरुष उसकी मृत्यु पर उत्पन्न करुणा की वसूली करते घूमे तथा कफ़न के लिए वसूले रुपयों से पूड़ी, मांस खा, शराब पी बेहोश मद्‌मस्त हों 'ठगनी क्यों नैंना झपकावें' का सामूहिक गान कर इतिश्री करे-अरे भाई! यह कौन नारी के लिए सेवा त्याग और आदर्श की कल्पना है. प्रेमचन्द्र की परम्परा में जयशंकर प्रसाद भी कंकाल, तितली के माध्यम्‌ से इतिहास की अतीतवासी घटनाओं को ही दोहरा रहे थें.

प्रेमचन्द्र एवं प्रसाद की परम्परावादी दृष्टिकोण को नकारते हुए यशपाल के पात्र अकड़कर समाज के सामने खड़े हो जाते हैं. दिव्य समाज के सामने तन कर खड़ी हो जाती है और पुरुष की तथाकथित स्वर्णिम-स्वर्णिम संस्कृति को सामने रखकर यक्ष प्रश्न रखती है कि आपको यह बताना होगा कि आपके, इस स्वर्ग के समान संसार में कहीं मेरा भी स्थान है क्या? नारी की स्वतंत्रता केवल वेश्या बनने में ही है क्या?

थोड़ा सा परिवर्तन प्रेमचन्दोत्तर कथा साहित्य में नारी की स्वरुप बदलता है. एक तरफ जैनेन्द्र की काम-कुंठा से त्रस्त, इलाचंद जोशी की मनोरुग्ण, अज्ञेय की छद्‌म सामाजिकता को ओढ़े डरी-सहमी सम्बन्धों की उत्सुक नारी है, तो दूसरी तरफ यशपाल की शैल और सोमा हैं, जिसके लिए 'सेक्स क्रांति' हो गई है. एक सहज स्वाभाविक रुप में वह नहीं आती, जिसकी आवश्यकता उसे थी. यहॉ यह बता देना आवश्यक है कि प्रेमचन्द्र और उसकी परम्परा के अन्य उपन्यासकारों ने यौन प्रवृत्तियो से ऊपर वैवाहिक बंधन की पवित्रता को प्रधानता दी थी क्योंकि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद शिक्षित युवा विवाह संस्था में विश्वास रखते हुए पाश्चात्य शिक्षा के कारण प्रेम की परिणति को विवाह में चाहता था, परन्तु समाज की विशमता एवं आर्थिक परेशानियां उसके कार्य में अवरोधक तत्व के रुप में कार्य कर रही थी जिससे उनका आदर्श एक दिखावा मात्र होकर रह गया जो स्वाभाविक था-डॉ. कुंवरपाल सिंह की मानें तो सन्‌ १६५० ई० तक हिन्दी उपन्यास में एक भी ऐसी नारी नहीं है, जो कुछ नवीन परम्पराओं का निर्माण करती दिखाई दे, जो हर आंधी तूफान में दृढ़ होकर निरन्तर प्रगति के पथ पर बढ़ती रही हो. जो हर संघर्ष के बाद और भी अधिक सुदृढ़ होकर निकली हो. अपने आदर्श, विश्वास और प्रेम के लिए मर जाना आसान है, पर उन्हें व्यवहार में लाना कठिन हैं.

प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, उरई, जालौन

::

अब तो यहां

अब तो यहां गहरे रिश्ते भी टूटते हैं।
हो बे-आबरू, बदल भेष अपने भी लूटते हैं।।
देख शैतानों को, शरीफों के लिबास में।
सांसो के सरगम तक, सहम उठते हैं।।
नही हैं मरहम मयस्सर उन आबलों को।
जो सांस के संग दिल में बनते -फूटते है।।
कूछ कर गुजर जाने के वे इरादे आज।
तड़फ-तड़फ दिल में ही घूट-२ घूटते है।।
हाम फस अपनो के ही बिछाये जाल में।
अब आजाद होंसलें तक पीछे छूटते है।।
धन की खातिर हो बूराइयों में हाजिर।
नहीं मिलता वो सुख ढूढते है।।
है अब यहां भले-भले के भी
गुनाहों की ओर कदम मूड़ते है।।
यह भी क्या कम गम हैं 'जम'।
निज से पहले आज निद उजड़ते हैं।
देखों कैसे राहे वफा में लूटे दिल।
रोज महा सिसक-२ सदमों से जूड़ते हैं।।
जख्मों को यूं ढके बैठे हैं सब यहॉ।
हाथ लगाये तो कराह उठते है।

>t;flag vyokjh]
बल्लारी, कर्नाटक-५८३१२१

डॉ० विजय कुमार भार्गव

१ नवम्बर १९३५ को स्व० प्रयाग नारायण भार्गव के घर धौलपुर, राजस्थान में जन्में डॉ० विजय कुमार भार्गव का सार्थक जीवन व्यतीत करना ही जीवन का लक्ष्य हैं. आपने १९५० में यू.पी.बोर्ड से तृतीय श्रेणी में हाईस्कूल, १९५२ में यू.पी.बोर्ड से द्वितीय श्रेणी इण्टर, १९५४ में आगरा विश्वविद्यालय से द्वितीय श्रेणी बी.एस.सी, १९५६ में राजपूताना विश्वविद्यालय से द्वितीय श्रेणी एम.एस.सी-भौतिकी, १९७१ में न्यूयार्क विश्वविद्यालय से ए ग्रेड में नाभिकीय अभियान्त्रिकी/ न्यूक्लियर इन्जीनियरिंग में एम.ई., १९९२ में मुबई विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. भौतिकी में किया. आपने वैज्ञानिक शोध कार्य, राष्ट्रहितकारी समाज सेवा के क्षेत्र को चुना. १९५६-६१ तक बहुउद्देशीय माध्यमिक विद्यालय, राजस्थान सरकार में उच्च कथा को भौतिकी का अध्यापन, १९६१-६८ एवं १९७० से ९० तक भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, परमाणु उर्जा विभाग, में विकिरण स्रोतों के उपयोग में विकिरण मात्रा मापन विधियॉ एवं यन्त्रों से संबंधित अनुसंधान एवं विकास तथा विकिरण प्रतिष्ठानों का विकिरण सुरक्षा की दृष्टि से अवलोकन पर कार्य किया, १९६८-७० न्यूयार्क विश्वविद्यालय अमेरिका में, अन्तर्राष्टीय परमाणु उर्जा एजेन्सी की छात्रवृत्ति एवं भारत सरकार की प्रतिनियुक्ति पर अध्ययन कार्य, १९९०-९५ तक परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद में किरणों संबंधी विकिरण संरक्षण नियम, संहिता एवं मार्ग दर्शिका दस्तावेज तैयार करना पर कार्य किया, ३० अक्टूबर १९९५ को आप सेवानिवृत हो गये.

सगोष्ठी आयोजन /हिन्दी में वैज्ञानिक कार्यः अपने विषय से संबंधित लगभग दस संगोष्ठियों एवं कार्यशालाएं आयोजित की, जिनमें छः हिन्दी भाषा के माध्यम से आयोजित थी.

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों की आफिसियल लेन्गुएज हिन्दी के विकास के लिए - हिन्दी भाषी क्षेत्रों से तकनीकी सेवा कार्य संबंधी पत्राचार एवं तकनीकि रिपोर्ट लिखा, कार्यशाला एवं संगोष्ठी में वार्ताए एवं उनका संपादन, समाचार पत्र, पत्रिकाओं तथा पुस्तक के लिए मौलिक लेखन एवं अनुवाद कार्य जनसाधारण को परमाणु ऊर्जा व विकिरण के उपयोग एवं खतरों की सही सही जानकारी देने के लिए परमाणु एवं विकिरण पर ४५ चार्टो को तैयार किया व प्रर्दशित किया. भारतीय विकिरण संरक्षण की अंग्रेजी में निकलने वाली पत्रिका में हिन्दी को स्थान दिलाया.

आप भारतीय विकिरण संरक्षण परिषद व उसकी कार्यकारिणी के आजीवन सदस्य, दो वर्ष तक सचिव, भारतीय चिकित्सा भौतिकीविद् परिषद की आजीवन सदस्य,चार वर्ष तक कार्यकारिणी समिति सदस्य, दो वर्ष तक कोषाध्यक्ष, हिन्दी विज्ञान साहित्य परिशद, भाभा अनुसंधान केन्द्र के आजीवन सदस्य, दो वर्ष तक कोषाध्यक्ष, उद्योग में विकिरण के अनुप्रयोग के लिए राष्ट्रीय परिषद, के आजीवन सदस्य

आलेख प्रस्तुतिः सेवाकाल के दौरान राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में अपने विषय से संबंधित ३० आलेखों का प्रस्तुतीकरण

समाज सेवाः १.भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन के संयुक्त प्रयास के लिए राष्ट्रीय परिषद का गठन किया हैं व उसके अध्यक्ष को सुशोभित. इसके अन्तर्गत २ अक्टूबर २००३ को राष्ट्रहित की भाषा नीति निर्धारित कराने के लिए भाषा नीति संकल्प दिवस मनाया. जिसमें शिक्षा व नौकरी में सबको समान अवसर, राष्ट्र को मानसिक गुलामी से मुक्ती व राष्ट्र की सम्पर्क भाषा को संविधान में घोषित करने की मांग की गयी. २. विश्व हिंदी न्यास, अमरीका, द्वारा प्रकाशित विज्ञान प्रकाश की प्रचार समिति के अध्यक्ष ३.नेशनल ब्लाईन्ड एसोसिएशन द्वारा हिन्दी ब्रेल में प्रकाशित विज्ञान पत्रिका 'विज्ञान भारती' के मानद संपादक ४. हिन्दी में वैज्ञानिक पुस्तकों एवं लेखों को लिखना जिसमें परमाणु की आत्मकथा-रक्षा मंत्रालय द्वारा पुरस्कृत,चिकित्सा में विकिरण क्यों और कैसे, पुस्तक लेखन जारी, विज्ञान प्रकाश में 'चिकित्सा में और उद्योग में विकिरण संरक्षण' प्रकाशित भारतीय भाषा के प्रतिष्ठापन संबंधी विचार समाचार पत्र व पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं

++++++++++++++

vko';d lwpuk

प्रिय पाठकों हम शीघ्र ही जापानी भाषा घर बैठे सीखने के लिए एक स्तम्भ प्रारम्भ करने जा रहे हैं जिसमें जापानी भाषा के वर्णाक्षरों से लेकर बोलचाल तक की जानकारी समाहित होगी. यह विश्व स्नेह समाज में निरन्तर प्रकाशित होगा. इसे जापानी भाषा की कई पुस्तकों को हिंदी में अनुवाद कर चुकी सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखिका व जापानी, हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत की ज्ञाता व भारत -जापान मैत्री संघ की अध्यक्षा डॉ. श्रीमती राज बुद्धिराजा के द्वारा प्रदान किया जाएगा.

अगला बच्चा कभी नहीं

fxfj'k izlkn xqIrk

(सेठ रामलाल अपने कमरे में बैठे सिक्का गिन रहे हैं. बगल में बैठा उनका नौकर देवू उन्हें पंखा झल रहा है.)

सेठ रामलाल-न जाने आज कैसा दिन बीतेगा? लाखों रुपया सूद पर लगा रखा हूँ. पर जल्द न तो कोई मूलधन देना चाहता है और न उसका सूद.

देवू-मालिक आप कितना पढ़े हैं? आपका हिसाब बड़ा पक्का मालूम पड़ता हैं. मैंने दो जोड़ दो चार पढ़ा हैं. पर आप सूद जोड़ते समय दो जोड़ दो पांच बना देते हैं.

सेठ रामलाल- देखो देवू! यह बिजनेश बड़ा ही खराब हैं. लोगों को रुपया देकर समय पर भलाई करो और बदले में गाली सुनो कि सेठ साला बड़ा बईमान हैं.

देबू- मालिक आज सारी दुनिया बईमान हो गई हैं. बईमान आपको बईमान नहीं तो क्या ईमानदार कहेगा?

सेठ रामलाल-मैं बड़ी मशक्कत से रुपया जमा करता हूँ. अपनी सारी सुख-सुविधा रुपया जमा करते समय छोड़ देता हू. अब उम्र लम्बी हो चली हैं. दिमाग कमजोर है. अगर थोड़ा लेन-देन में भूल हो जाती है तो तुम्हीं कहो मैं बईमान हो गया हूँ.

देबू-नहीं मालिक. आप बईमान थोड़े हैं. हॉ, एक बात कहूँ सूद जोड़ते समय आप राम-राम जरुर बोलते हैं.

सेठ रामलाल-देख देबू! मैं राम राम क्यों बोलता हूँ तुम समझोगे नहीं. अजामिल, शबरी और न जाने कितने राम नाम ले तर गये तो मुझ जैसा आदमी क्या राम नाम ले न तरेगा?

देबू- हॉ मालिक! आप जरुर राम नाम लेकर रामनाम सत हो जाइये. अब कितना जीयेगें. कुछ हमलोगों के जीने के लिए तो छोड़िये.

(करीम का पेट पर हाथ रखे हुए उदास चेहरा लिए हुए प्रवेश)

करीम-सेठ जी दो दिन से कुछ खाया नहीं हूँ. कुछ रुपया देकर मदद कीजिए.

सेठ रामलाल- देखो करीम. तुम दो दिन से भूखे हो या चार दिन से. मैं क्या करुँ? तुमने पहला रुपया चुकता

किया नहीं ऊपर से और रुपया चाहते हो. चल भाग अब रुपया नहीं मिलेगा.

करीम-रहम कीजिए सेठजी. मेरे बच्चे भूखों मर जायेगें.

सेठ रामलाल-तो मैं क्या करुँ? बच्चे जनों तुम और खिलाऊँ मैं. चल हट रुपया नहीं मिलेगा. भागता है कि नहीं. उठाऊँ डंडा तेरे ऊपर.

करीम-सेठजी ऐसा नहीं कीजिए मेरे ऊपर. कम से कम मेरे बच्चों के ऊपर तो रहम कीजिए.

सेठ रामलाल थोड़ा नरम होते हुए-अच्छा यह तो बताओ तुम्हारे कितने बच्चे हैं.

करीम-मेरे कुल बारह बच्चे हैं. तेरहवॉ होने वाला हैं.

सेठ रामलाल-सुअर की औलाद कहता है बारह बच्चे हैं. तेरहवॉ होने वाला हैं. शर्म नहीं आती है तुमको. तुमने तो परिवार नियोजन की धज्जी उड़ा दी हैं.

देबू-सेठजी एक बात कहूँ. मुझे देखिए न केवल एक बच्चा है. शादी के काफी दिनों बाद हुआ. काफी ओझा गुणी से दिखाया. संतोषी मॉ का व्रत रक्खा तब जाकर बलचनमा का मुँह देख पाया हूँ.

सेठ रामलाल-मैं अपना दुखड़ा किससे कहूँ. मुझे तो एक मुसरी तक नही हुआ है. हॉ एक बात कहूँ. सब बच्चों के बदले मेरी सेठानी अकेले खा जाती है.

देबू-तो सेठजी आप क्या खाते हैं?

सेठ रामलाल-मैं खाऊँगा तेरा सर. चल भागता है कि नहीं. हॉ जरा जा सेठानी जी से चाबी तो मांग ला.

करीम-सेठजी! अबतक मेरा चूल्हा न जला होगा? बीबी राह देखती होगी. बच्चे भूख से तड़पते होगें. अबकी बार दया दिखाइये.

सेठ रामलाल-देख करीम. इस बार तो मैं तुझे रुपया दे दूंगा पर एक शर्त पर.

करीम-वह क्या सेठ जी?

सेठ रामलाल-तुझे कसम खानी होगी. कान पकड़कर उठना बैठना होगा और कहना होगा अगला बच्चा न होगा. चल देखता क्या शुरु हो जाओं.

करीम-(कान पकड़कर उठता-बैठता है और कहता है) सेठ जी! अब मुझे अगला बच्चा कभी न होगा.

सेठ रामलाल-शाबाश! बहुत ठीक अब बंद करो.

करीम-(सेठ जी के नजदीक जाकर) सेठजी एक बात पूछूँ बुरा तो न मानेगें.

सेठ रामलाल-ठीक है पूछो.

करीम-आपको एक भी बच्चा न है. आधा पैंचा दे दूँ. (सेठजी के पास जाकर) जरा उसे ठीक से पालेगें.

सेठजी आपने मेरे ऊपर बड़ी मेहरबानी की है. मैं भी आपकी सहायता करना चाहता हूँ.

सेठरामलाल-तुम क्या मदद करेगा शैतान. अपने तो मांगता फिरता है और कहता है मेरी मदद करेगा.

करीम-मैं अल्लाह कसम खाता हूँ. जरुर मैं आपकी मदद करुंगा.

सेठ रामलाल-बोल -बोल तूं कैसे मदद करेगा.

करीम-मैं आपको अपना आधा बच्चा दूंगा. उसे आप दुलार करियेगा. उसे कहिएगा-फज़ल आ दुध पियो. करिमन आ चाकलेट ले जा.

सेठ रामलाल-शैतान कहीं का और कुछ दिन बाद कहेगा इन सबों की शादी करा दें. अब आपही इसके असली अब्बा है. चल भागता है कि नहीं.

(इसी समय फज़ल, करिमन, रहीमन, अब्दुल, गफ्फर, शौकत का प्रवेश)

फजलू-अब्बा बड़ी भूख लगी है. कुछ खाने को दीजिए ना.

करीम-देखता क्या है अब! अब तेरे अब्बा सेठजी होगें. जा उनसे मांग.

(करीम के सभी बच्चे सेठ जी को घेर लेते हैं. कोई उनसे बिस्कुट मांगता है तो कोई चाकलेट, कोई क्रिकेट का बैट, कोई किताब-पेन मांगता हैं.)

सेठ रामलाल-हाय! हाय! कैसा जमाना आ गया है. बच्चा दूसरो का और दुख मुझको. इसलिए तो मैं बार बार कहता हूँ. प्रभु! सब कुछ दो पर अगला बच्चा कभी न दो.

करीम-सेठजी! आप ठीक कहते हैं. मैं अल्लाह के सामने कान पकड़ता हूँ. खुदा सारी मेहरबानी करना पर अगला बच्चा कभी न हो इस पर अवश्य ध्यान देना. मंजरी निकुंज,विलाशी, देवधर, झारखंड

राष्ट्र भाषा हिन्दी का हॉल

राष्ट्रभाषा हिन्दी का ये हॉल देखिए,
अंग्रेजी ने कैसे कर दिया फटेहाल देखिए।
कहने को तो हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हैं,
लेकिन अंग्रेजी ने उसे लगा दी अब बिन्दी हैं।
जहॉ देखो अंग्रेजी में हर काम काज होता हैं,
बिना अंग्रेजी बोले तो किसी पे आज रौब नहीं जमता हैं।
स्कूल, कॉलेज, ऑफिस जहॉ पर भी देखिए,
हर तरफ अंग्रेजी का बढ़ता चलन
और हिन्दी का बुरा हाल देखिए।
हम कैसे मान लें कि हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा हैं
रोज़ उसका हो रहा पतन और नाश हैं।
हम लोगों को कैसे समझाए कि अभी भी
हिन्दी ही हमारे देश की राष्ट्रभाषा हैं।
राष्ट्रभाषा में ही आप बोलिए
उसका अपमान तो मत कीजिए।
कुछ तो उस पर रहम कीजिए।
अंग्रेजी से बिलकुल नाता ही तोड़ दीजिए,
नहीं तो एक दिन राष्ट्रभाषा हिन्दी खो जाएगी
फिर किसी को भी उसकी याद तक न आएगी।
हम अंग्रेजी तारीख में हिन्दी दिवस मनाते हैं।
बस एक दिन हर साल हिन्दी दिवस पर ही
हिन्दी-हिन्दी का शोर मचाते हैं।
और घर आकर सब भूल जाते हैं।

राजीव नामदेव 'राना लिधौरी', टीकमगढ़, म.प्र.

साहित्यिक, सॉस्कृतिक, कला संगम अकादमी

परियावॉ, प्रतापगढ़, उ.प्र. २२९४१६

अकादमी द्वारा अप्रैल ०७ के २६वें अधिवेशन में चयनित ६० साहित्यकारों, पत्रकारों एवं कलाकारों को साहित्यश्री, पत्रकारश्री, कलाश्री, विवेकानन्द सम्मान, कबीर सम्मान, रोहित कुमार माथुर स्मृति सम्मान, सुश्री राजकिशोर मिश्र स्मृति सम्मान, हिन्दी प्रतिष्ठा सम्मान, हिन्दी गरिमा सम्मान एवं प्रज्ञा भारती सम्मान से अलंकृत करेगी.यह सभी सम्मान हिन्दी भाषी तथा अहिन्दी भाषी लेखकों को बराबर दिए जायेंगें. मानदोपाधि विद्या वाचस्पति, विद्या वारिधि एवं साहित्य महोपाध्याय हेतु अलग से टिकट युक्त लिफाफा भेज कर फार्म मंगाये. २१ श्रेष्ठ साहित्यकारों को रजत मेडल भी प्रदान किया जाएगा. सम्मानोपाधियॉ कृतियों की श्रेष्ठता पर प्रदान की जाती हैं, अतः लेखक गण अपनी श्रेष्ठ कृतियों की दो प्रतियां, प्रकाशक गण अपनी पत्र पत्रिकाओं के तीन अंकों की दो दो प्रतियां, कलाकार या चित्रकार बन्धु स्व निर्मित चित्र या फोटोग्राफ्स के अलग-अलग तीन चित्र भेजें. सभी प्रतिभागी अपना जीवन परिचय, अपना एक चित्र, दो पता युक्त पोस्ट कार्ड, ३५ रुपये का डाक टिकट ३१ जनवरी २००७ तक पंजीकृत डाक से अवश्य भेज दें. सभी निर्णय एक निर्णय समिति करेगी. विगत तीन वर्षो में अकादमी द्वारा सम्मानित विद्वान सम्मानार्थ अपनी प्रविष्टि न भेजें.

वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेष', सचिव

iath-la-%832

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

सम्पर्क स्थलः एल.आई.जी–93, नीमसरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसी-9335155949 **email**-sahityaseva@rediffmail.com,gokul_sneh@yahoo.com

सदस्यता फार्म

कृपया तीन फोटों सलंग्न करें

क्रंमांक.............

नाम ....जन्म तिथि ....

पिता का नाम ....शैक्षिक योग्यता ....

लेखन/पत्रकारिता का अनुभव ....वर्ष ....मुख्य व्यवसाय ....

कार्यक्षेत्र ....थाना ....

स्थायी पता ग्राम/मोहल्ला ....

पत्रालय/थाना ....

कार्यालय का पता : ....

ब्लाक/वार्ड .... तहसील/जिला ....

दूरभाष : कार्यालय ....निवासः ....

अन्य संगठन जिससे आप जूड़ें हुए हों:...

आप हिंदी की किस प्रकार सेवा करना चाहते हैंः ....

दिनांक ....   हस्ताक्षर सदस्य ....

संस्थान के उद्‌देश्य/नियम

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान का गठन विश्व भर के हिंदी प्रेमियों की रचनात्मक प्रतिभा का विकास, आर्थिक व सामाजिक उन्नयन, प्रतिष्ठा व सम्मान की सुरक्षा करना है। इसके द्वारा प्रत्येक वर्ष हिंदी साहित्यकारों को सम्मानित करना व मानद उपाधियॉ देना, हिंदी लेखन/पत्रकारिता महाविद्यालय खोलकर उसमें हिंदी के उत्थान हेतू कक्षाएं चलाना, अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिंदी का प्रचार प्रसार करना, विश्व के सभी देशों के हिंदी प्रेमियों को सम्मानित करना साहित्यकारों के हित के सरकार से सहयोग लेना इत्यादि होगा. आपको सदस्यता के लिए १००/- रुपये मात्र देना होगा. जिसमें ५०/-रुपये संस्थान की सदस्यता का व ५०/-रुपये पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का. साहित्य कोष के लिए अगर आप चाहे तो स्वेच्छा से १ रुपये से लेकर १०००००००००....../-रुपये तक जो भी आपकी सामर्थ्य हों दे सकते हैं. आपके द्वारा दी गयी धनराशि विश्व हिंदी साहित्य कोष में रक्खा जाएगा जिसका प्रयोग निर्धन साहित्यकारों की रचनाओं को प्रकाशित करने, उनकी आर्थिक मदद करने के लिए किया जाएगा.

शुल्क प्राप्ति रसीद

नाम ....

पता ....

.

से शुल्क रु0 ....(शब्दो में) .... प्राप्त किया।

प्राप्तकर्ता का नाम व पता ....

हं0 प्राप्तकर्ता

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

'विश्व स्नेह समाज' के पाठकों को विशेष तोहफा. घर बैठे प्राप्त करें वर्ष भर में १२ अंक अपनी प्रिय मासिक पत्रिका

विश्व स्नेह समाज

yksdfiz; fgUnh lkekftd ekfld if=dk

विशेष सदस्यता योजना में भाग लीजिए और सदस्यता फार्म भर कर यथाशीघ्र इस पते पर भेजें-

संपादक, 'विश्व स्नेह समाज', एल.आई.जी.-१३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

एक प्रतिःरु05/– विशिष्ट सदस्य : रु0 100/– द्विवार्षिक सदस्यता : रु0110/–
पंचवर्षिय सदस्यता :रु0 275/– दसवर्षीयः 500/–
आजीवन सदस्यःरु01001/– संरक्षक सदस्य :रु0 2500/–

☞विशिष्ट सदस्यों का सचित्र संक्षिप्त परिचय एक बार प्रकाशित किया जाएगा.

☞आजीवन सदस्यों का पूर्ण जीवन परिचय सचित्र एक बार तथा प्रत्येक वर्ष २/३का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा.

☞संरक्षक सदस्यों का एक बार पूर्ण जीवन परिचय, प्रत्येक वर्ष २/३ का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार स्वरूप प्रत्येक वर्ष अलग से २००रू० तक की पुस्तकें भेंट की जाएगी.

☞सबसे अधिक सदस्य बनाने वाले व्यक्ति को प्रसार श्री व विज्ञापन देने दिलावे वाले को विज्ञापन श्री से सम्मानित किया जाएगा.

सदस्यता फार्म

मैं 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक/द्विवार्षिक/पंचवार्षिक/आजीवन/सरंक्षक सदस्यता ग्रहण करना चाहता/चाहती हूँ तथा पूर्ण विवरण भर कर सदस्यता शुल्क के साथ डी.डी. भेज रहा/रही हूँ. पत्रिका निम्न पते पर भेजनें की कृपा करें.

पूरा नामः..

पूरा पताः..

शहरः..................................राज्यः.........................पिन कोडः........................

दूरभाष :(आ.)...................................(कार्या.)..

डी.डी. नम्बर..दिनांकः..........................

हस्ताक्षर

नोटः सदस्यता शुल्क मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट के जरिये ही स्वीकार किया जाएगा.

2006

पूरब के आकसफोर्ड की विकास यात्रा

हौसल कुमार चौबे

इलाहाबाद विश्वविद्यालय जहां एक ओर देश को नई महत्वपूर्ण विभूतियां प्रदान करने तो दूसरी ओर अपने गौरवशाली इतिहास के लिए हमेशा से ही जाना जाता रहा है. कई बार मन में यह प्रश्न उठता है कैसे नींव पड़ी होगी. शिक्षा के इस विराट संस्थान की. इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना में सर विलियम म्योर जो उस समय संयुक्त प्रान्त के लेफ्टिनेंट गर्वनर हुआ करते थे, का योगदान प्रमुख रुप से रहा है. उनकी दिली इच्छा थी कि आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के ही तर्ज पर इलाहाबाद में भी एक विश्वविद्यालय की स्थापना की जाये. अपनी इस इच्छा को सर म्योर ने २४ मई १८६७ को को इलाहाबाद दरबार में व्यक्त किया. इससे प्रभावित होकर इलाहाबाद के प्रबुद्ध नागरिकों ने इस हेतु कवायद तेज कर दी. कुछ प्रभावशाली लोगों की बैठक १८६९ में तत्कालीन कमिश्नर श्री कोर्ट के बंगले में हुई और एक योजना बनाकर प्रारम्भिक कमेटी बना दी गई, जिसके अवैतनिक सचिव प्यारे मोहन बनर्जी नियुक्त हुए. उसी समय पब्लिक एजूकेशन के निदेशक कैम्पसन ने प्रस्तावित महाविद्यालय का प्रारुप तैयार किया; जिसे तत्कालिक भारत सरकार ने नकार दिया. इसको देखते हुए सर विलियम म्योर ने अपनी ओर से इलाहाबाद में एक कॉलेज स्थापित किए जाने की स्वीकृति दे दी तथा दो हजार रुपये का चंदा भी दिया. पुनः एक कमेटी बनाई गई जिसकी पहली बैठक ६ नवम्बर १८६९ को राजभवन में हुई. कमेटी ने यह तय किया कि महाविद्यालय की स्थापना के लिए उपयुक्त स्थान वर्तमान एल्फ्रेड पार्क के निकट खाली भूमि होगी.

स्थान निश्चित हो जाने के उपरांत दूसरी कमेटी बनाई गई जिसका कार्य महाविद्यालय के लिए इमारतों और भवनों का निर्माण करवाना था. जब तक इमारते न तैयार हो जाती कमेटी ने २५० रुपये मासिक किराये पर दरभंगा कैंसल कॉलोनी पर ले लिया. २२ जनवरी १८७२ को स्थानीय सरकार ने इलाहाबाद में नवीन महाविद्यालय खोले जाने का ज्ञापन भारत सरकार को स्वीकृति हेतु भेजा. ज्ञापन को स्वीकार कर लिया गया तथा महाविद्यालय का नाम सर म्योर के नाम पर ही रखने का फैसला भी हुआ. ९ दिसम्बर १८७३ को म्योर सेन्ट्रल कॉलेज की आधारशिला रखी गई, जिसे बनकर तैयार होने में १२ वर्ष लगे. इसका विधवत् उद्घाटन ८ अप्रैल १८८६ को तत्कालीन वायसराय लार्ड डफरिन द्वारा किया गया.

२३ सितम्बर १८८७ को एक्ट पारित हुआ, जिसके फलस्वरुप इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना हुई. मार्च १८८९ में विश्वविद्यालय की पहली प्रवेश परीक्षा आयोजित हुई. १९०४ में इण्डियन यूनिवर्सिटीज एक्ट परित हुआ जिसके फलस्वरुप इलाहाबाद विश्वविद्यालय का कार्यक्षेत्र आगरा, अवध ा, बरार, अजमेर, मेवाड़, राजपूताना एवं सेन्ट्रल इण्डियन एजेन्सीज के प्रान्तों तक कर दिया गया. १८८७ से १९२७ की अवधि में लगभग ३८ विभिन्न संस्थान एवं कांलेज विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हुए. १९२९ में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी एक्ट लागू करके म्योर सेन्ट्रल कॉलेज का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त करके विश्वविद्यालय को एकित व आवासीय स्वरुप प्रदान किया गया. सन् २००३ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय को पुनः केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने का निर्णय लिया गया. हालांकि सन् १८८७ में इसकी स्थापना एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रुप में ही हुई थी, जिसे एक कानून के तहत १९७४ में राज्य सरकार को सौंप दिया. तभी से इसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने की कोशिशे की जा रही थी.

लगभग एक सौ सत्रह वर्षो के गौरवमयी इतिहास को समेटे इलाहाबाद विश्वविद्यालय आज प्रगति की राह पर दौड़ा जा रहा है. विश्वविद्यालय में शिक्षा को सीधे रोजगार से जोड़ते हुए कई प्रोफेशनल पाठ्यक्रम शुरु किए गए है और आगे भी शिक्षा के क्षेत्र में नई मिसाल पेश करने के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय हमेशा तत्पर रहेगा.

ये लों नीद की गोलिया

महिला(डॉक्टर से)-डॉक्टर साहब मेरे पति आजकल बड़े बेचैन रहते हैं, जाने उन्हें क्या हो गया हैं.

डॉक्टर (महिला से)-आपके पति को आराम की सख्त जरुरत हैं. ये लीजिए नींद की गोलियां.

महिला (डॉक्टर से)-ठीक है, मैं उनको ये दवा समय पर दे दूंगी.

डॉक्टर (महिला से)- यह उनके लिए नहीं हैं.

महिला (डॉक्टर से)- तो फिर किसके लिए हैं?

डॉक्टर(महिला से)- यह आपके लिए हैं.

मरियम्मन ही शीतला माता

✍ डॉ० अनिल कोहली,

सर्वसुखप्रदायिनी, सर्वदुःखनिवारिणी, सर्वेश्वरी, सर्वपाप नाशिनी जगन्माता, मॉ शीतला भवानी का मुख्य पर्व शीतला अष्टमी/बासोड़ा मनाया जाता है. हरियाणा की स्थानीय परम्पराओं के अनुसार यह पर्व दुलहण्डी, फाग के बाद पहले सोमवार को मनाया जाता है. मॉ शीतला देवी बंगाल में अगर मंगला औलाई चण्डी, षष्ठी देवी, मनसा देवी, बगलामुखी आदि नामों से जानी जाती है तो वह दक्षिण भारत में मारियम्मन, समयपुरमारी, चैल्लियाम्मन, गंगैअम्मन, ऐलेअम्मन, पत्रिरांगअम्मन, मारी आदि नामों से प्रसिद्ध हैं. इसी प्रकार जम्मू व कश्मीर में जोड़ियॉ माता, सस्थल, रियोशर माता आदि, इलाहाबाद में मासूरिका माता के नाम से पहचानी जाती है. इस प्रकार अलग-अलग स्थनों पर माता शीतला देवी के अलग-अलग नाम है और अलग-अलग समय में पूजा का विधान है. शीतलाअष्टमी/बासोड़ा तो प्रत्येक स्थान पर होलिका दहन/फाग के बाद ही चैत्र कृष्ण पक्ष की शीतला अष्टमी से आषाढ़ मास की शीतला अष्टमी तक है.

गांव मरूदूर, तंजाऊर जिला, तमिलनाडु के प्रसिद्ध हिंदी सेवी व अनुवादक श्री एम. सुब्रहयम बी.ए. ने अपने एक संक्षिप्त लेख के माध्यम से जो जानकारियॉ श्री माता शीतला देवी से संबंधित भेजी है, वह इस प्रकार है- तामिलनाडु में श्री मरियम्मन को आदिपरा शक्ति का दूसरा रुप मानते है. तमिलनाडु के हर गॉव में, छोटा हो या बड़ा मरियम्मन का मन्दिर जरुर मिलेगा. गांव के लोगों की तरह देवी सादगी अपनाई हुई है. ग्रामवासियों का अटल विश्वास है कि मारियम्मन वर्षा की देवी है. तमिल में पारी का अर्थ है वर्षा और अम्मन का अर्थ देवी है. इस देवी को पूजा करने से समय पर वर्षा होती है, खेती बाड़ी होती है और गांव समृद्ध होता है. लोगों का यह भी विश्वास है कि मारियम्मन बीमारी को दूर करती है, विशेषकर चेचक को. जो निःसन्तान है, इसकी मनौती करते हैं और संतान प्राप्ति होती है. जो निष्ठा व लगन से इनकी भक्ति करता है उसकी सभी कामनाएँ पूर्ण होती है.

मरियम्मन के बारे में कई दंत कथाएँ प्रचलित है. एक प्रसिद्ध कथा है-वसुदेव-देवकी की आठवी संतान कंस की तलवार की मार से बचकर आकाश में उड़ गई. लोग मानते है कि वह लड़की माया देवी ही है जो आदि पराशक्ति की अंश है. यही माया देवी तमिलनाडु के तिरुच्चिरापल्ली नगर के पास समयपुरम नामक गांव में प्रतिष्ठित है.

दूसरी कथा है-महर्षि जमदग्नि ने अपनी पत्नी के पतिव्रत्य पर सन्देह कर उसका सिर धड़ से अलग करवा दिया. बाद से पुत्र परशुराम की प्रार्थना पर पत्नी जगदाग्नि ने जीवन दान दिया और कहा तुम गांवो में ग्रामवासियों की बीमारी दूर करने में लग जाओं. तुम वहॉ रेणुका देवी नाम से प्रचलित रहोगी और लोगों की सेवा करती रहोगी. तुम वहॉ ग्राम की रक्षक देवता बनकर रहोगी.

मरूदूर गांव में एक मारियम्मन मंदिर है. लोग कहते है कि यह तीन सौ साल पुराना है. गांव के बड़े बूढ़ों का कहना है कि समयपुरम का मारियम्मन ही यहॉ विराज रही है. तीस वर्ष पहले इस गांव में एक आठ-दस साल की कन्या आयी थी. उसने वहॉ के आदमी से पूछा-ब्राहमणों की बस्ती कहॉ है? उस आदमी ने दक्षिण की ओर संकेत करते हुए कहा-दक्षिण में एक फरलांग जाइये. लड़की के जाने के बाद उस आदमी ने सोचा-यह लड़की तो छोटी है, अकेली आयी है. यह कौन होगी? उसको संदेह हुआ. वह तुरंत ब्राहमणों की बस्ती में आया और लड़की के बारे में पूछा. उस ब्राहमण ने कहा-यहॉ कोई लड़की नहीं आई. तुमको भ्रम हो गया है. उस ग्रामवासी ने कहा-नहीं, जी मैंने अपनी आंखो से देखा, वह कन्या इधर ही इधर ही आ रही थी. दोनों में थोड़ी देर तक वाद-विवाद होता रहा फिर दोनों चुप हो गये. कुछ महीने बाद ब्राहमण बस्ती अग्रहारम के पास के खेत के स्वामी एक पेड़ को काट रहा था. जब उसने पेड़ की जड़ कुल्हाड़ी मारी तो पेड़ की जड़ से खून के फव्वारें की तरह निकल रहे थे. वह घबराकर मिट्टी से जड़ को पार किया. घबराहट के कारण उसने अपने खेत को दूसरे को बेच दिया. खरीददार ने एक दिन पेड़ को काटा तो कुल्हाड़ी के पेड़ की जड़ से लगने से झनझनाहट की आवाज आई. उसने जमीन को खोद तो उसे पंच धातु की एक मूर्ति मिली. मूर्ति को झाड़ पोछकर देखा तो पाया कि वह मरियम्मन की मूर्ति है. सब ग्रामवासी बहुत प्रसन्न हुए और छोटा मंदिर बनाकर उसमें उस अम्मन को प्रतिष्ठित किया.

उत्तर भारत तथा गुड़गांव के श्रीमाता शीतला देवी मन्दिर में भी उपरोक्त लगभग सभी प्रकार की मान्यताएं वैसी है जैसी कि दक्षिण भारत के श्री मारियम्मन माता से जुड़ी है.

++++++++++

युवा पीढ़ी और देश भक्ति की भावना

जीवन के हर क्षेत्र में युवा वर्ग की आवश्यकता है

आज के भारतीय युवाओं की नई पीढ़ी की दिशा और दशा दोनों ही दयनीय होती जा रही है. विदेशी संस्कृति के माया जाल पर मुग्ध नई पीढ़ी अपनी संस्कृति और परम्पराओं से दूर होती जा रही है. राष्ट्रीय विचार धारा, राष्ट्रीय भावना, देश प्रेम की भावना लुप्त होती जा रही है. जिस देश के युवा वीरों ने देश प्रेम की भावना से ओत प्रोत होकर हॅसते-हॅसते फॉसी के फन्दे पर झूल कर देश को आजादी दिलायी आज उसी आजाद भारत का युवा संकीर्ण विचारधाराओं से घिर कर देश प्रेम की भावना से दूर होता जा रहा है. उसे इस अज्ञानता के अन्धकार से उबरना होगा. उसे अपनी संस्कृति और परम्पराओं को अपनाना होगा तथा देश के प्रति अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्व को समझना होगा. किसी देश और किसी काल की गवाही ले लो. युवा वर्ग नें ही मानवीय मूल्यों को सम्मान की मालायें पहनायी है. अन्याय, शोषण और उत्पीड़न के खण्डहरों पर युवा हाथों ने ही आजादी का परचम लहराया है. इस चुनौती के जवाब में युवा वाणी ने यही दोहराया है-

सर फरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में हैं

देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है.

यदि वृद्ध पुरूष राष्ट्र के मस्तिष्क होते हैं, तो युवक उसकी मांसपेशियां, उसके हाथ, उसके पांव होते हैं. जीवन के हर क्षेत्र में युवा वर्ग की आवश्यकता होती है.

अतः युवा वर्ग की क्षमताएं अनन्त होती है. युवा ही लोकतंत्र के सच्चे प्रहरी है. युवा शक्ति के निर्माण पर ही लोकतंत्र का भविष्य सुरक्षित होगा.

रविशंकर द्विवेदी, नैनी, इलाहाबाद

++++++++++++++++++++++

आज की युवा पीढ़ी तो सुप्तावस्था में है

'प्रजातंत्र मूर्खो की राज्य पद्धति है' अरस्तू का यह कथन वर्तमान समय में सार युक्त एवं सत्य प्रतीत होता है. आज हमारे राजनेता अपने निजी हितों के कारण राष्ट्रीय सिद्धातों और नैतिक दायित्वों से परे हटकर देश के साथ खिलवाड़ कर रहे है.

युवा पीढ़ी आने वाले समय में देश की कर्णधार है. लेकिन यह क्या? आज की युवा पीढ़ी तो सुप्तावस्था में है. देश इस समय नेतृत्व के संकट के दौर से गुजर रहा है. शायद पहल बार युवाशक्ति की आवश्यकता महसूस की जा रही है. लेकिन युवा शक्ति में मातृभूमि के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा न के बराकर है. जेहाद् के नाम पर आतंकवादी अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं लेकिन हमारे यहाँ युवक नशा, सेक्स, फैशन के मायाजाल में इस कदर डूबे हैं कि उसे देश की दुर्दशा के बारे में कोई चैतन्य नहीं है. आज का युवक पाश्चात्य दर्शन से इस कदर प्रभावित है कि वह भारतीय चिंतन सत्यों के प्रति उपेक्षा का भाव धारण किये हुए है. उनके जीवन का उद्देश्य मात्र निजि स्वार्थ है.

इतिहास साक्षी है जब भी किसी देश में क्रांति का बिगुल बजा तो वहाँ की युवा शक्ति ने इसकी बागडोर अपने हाथो में ले ली. बांग्लादेश को अस्तित्व मे लाने के लिए ढ़ाका विश्वविद्यालय के छात्रों का योगदान चिरस्मरणीय है. परन्तु आज की युवा पीढ़ी ने कभी विचार नहीं किया माता-पिता, मातृभूमि और मातृभाषा का उन पर कुछ ऋण भी है. आज का युवक अव्यवस्थित, चित्त उन्मत एवं उदण्ड है. युवावस्था वह चरम अवस्थान है, जिसमें विकास की, अनन्त सम्भावनायें, अदम्भ आशायें, रचनात्मक शक्तियां तथा आध्यात्मिक शक्तियां निहित है. यदि उसकी रचनात्मक और आध्यात्मिक शक्तियां अविकसित एवं अतृप्त रह जाती है तो वह जीवन जीने योग्य कदापि नहीं रहा जाता है. बनार्ड शाह, एच.जी. वैल्स इत्यादि लेखकों ने युवा जीवन की इन्हीं दुर्बलताओं, असफलताओं एवं विसंगतियों पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है. उनके बाहय जीवन में जो अनियमितता और अनिश्चितता व्याप्त है, वे वस्तुतः उनके मन मानस में व्याप्त संदेह और व्याकुलता के प्रतिफलन है. वास्तव में उनके जीवन में भौतिक दृष्टि से कोई कमी नहीं है, यदि अभाव है तो आत्मा का. उन्हें अपने आदर्श मूल्यों की वृद्धि करनी होगी. जीवन में व्यवस्था अनुशासन, एकता, भाईचारा, प्रेम एवं सद्भावना का समावेश करना होगा. स्नेही युवको! उठो आलस्य छोड़ा, कमर कसो और अपनी मातृभूमि की सेवा के लिए तत्पर हो जाओ. सुबह का भूला शाम को आ जाये उसे भूला नहीं कहते.

श्रीमती रुपाली चक्रवर्ती, शिक्षिका

गम को भुलाना मुश्किल हैं

दिल को मनाना मुश्किल हैं
इन रास्तों के कोनों में
मंजिल को पाना मुश्किल हैं।
नाजुक सी इन निगाहों की
खामोश मुख्तसर हसरत
ख्वाबों में या हकीकत में
दोनो में लाना मुश्किल हैं।
दिल के हसीन ज़ख्मों को
नयनों से निकाल कर देखा
ऑखों की सर्द बारिश को
सावन बनाना मुश्किल हैं।
कहने को क्या कहें अब हम
कहना तो हैं बहोत आसान
हसरत के सुर्ख राजों को
दिल में दबाना मुश्किल है।

अर्चना श्रीवास्तव, इलाहाबाद

१.मानाकि तुम पतित पावन

सभी के पाप धोती हों,
पुनि-पुनि पड़ें पापी के पगों के,
भार को तुम सहती हों।
यम कर्म के समापन का
विचारा हैं यहॉ तुमने,
सभी के पाप खातों को,
सरे बाजार में बिकने।
मगर मैं तो पतित-ए-पत,
पापी अधम हूँ, व्यभिचारी
मुझे तारों तो जानुंगा,
हो यमराज से भारी।

२.आने वाले समय में यही होगा

कालिदास
जिस डाली पर बैठें,
उसी को काट रहे थें,
वह पागल हैं,
इस तरह से, वहॉ के,
लोग कह रहे थें।
लोग क्या समझे,
इस तरह से,
वे क्यों कर रहे थें,
आने वाले समय में,
यही होगा,
इस बात से आगाह कर रहे थें।

मुन्ना मोहन, गुना,म.प्र.

बिन पानी सब सून

धरती -आसमॉ-आदमी
सभी सूखें
कहीं नहीं हैं पानी
ऑख सहेजी
वरना कब का
मर गया होता पानी,
हजार फुट खोदने पर भी
पानी नहीं लगा
फिर और खोदा
तो थोड़ा-सा लगा
हाय-री क़िस्मत
वह भी पानी नहीं
हजार फुट खोदनेवालों का
पसीना निकला.
वह बेग़ैरत नहीं
शायद
प्यासा रहा होगा
वरना आदमी का खून
इतनी जल्दी
पानी नहीं होता.
ये सागर से घिरे,
वो शीश पर
गंगा धारण करते
'देवता अमर हैं'
आदमी की तरह
प्यासे नहीं मरतें.
नल पर
कितनी भीड़ हैं
देख मेरी सरकार,
दो कलसे की ख़ातिर
टांके लग गए
चार.
गरीब आदमी पानी से
प्यास ही नहीं
भूख भी मिटाता हैं
कैसे?
एक रोटी की कमी
दो लोटे पानी पी
पूरी करता हैं
ऐसे.
क्या यह पानी
पीने योग्य हैं?
'हॉ',
यदि प्यास लगी हों'
जोखू, फिर
गंदा पानी पी रहा
उसे 'ठाकुर का कुऑ' तो मिला
मगर सूखा हुआ.
उस दिन भी उसे
ठाकुर का कुऑ नहीं
कुएँ का पानी हीं.
तो चाहिए था.
कुदरत से
एक-तिहाई धरती
और दो-तिहाई
पानी मिला हैं,
फिर प्यास क्यों?
जॉच हो,
ये घोटाला
कब से चला हैं.

घनश्याम अग्रवाल, अकोला

आदत

दिलवालो में
जिसको समझने की
आदत है,
नज़र की जुबान जैसे
वही तरसता हुआ
कहावट है।

✍**मोनिमा चौधरी**,मलवारी, आसाम

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को जादू तो अच्छा लगता ही होगा. आइए जाने इस बार जादूगर पीसी सरकार के बचपन के बराबर में

आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

मेरा बचपन

जादूगर पीसी सरकार

जब पिताजी ने मुझे सीने से लगा लिया मुझ पर बचपन से ही जादूगर बनने का भूत सवार था. मुझे आज भी किसी फिल्म की तरह याद पड़ता हैं. बचपन में जब मैं अपने पिता को स्टेज पर परफॉर्म करते देखता था तो सारा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठता था. बस मेरा भी मन करता था कि मैं पिता की तरह दर्षकों को जादू दिखाऊं. फिर मेरे लिए भी खूब तालियां बजे. इसलिए मैं अपने पिता से जादू सिखलाने की जिद करता था और वह यह कहकर मना कर देते थे कि अभी तुम छोटे हो. अपनी पढ़ाई पूरी करो वक्त आने पर तुम्हें सब सिखला दिया जाएगा. बनना तो तुम्हें जादूगर है. हमारे यहां आठ पुष्तों से जादूगरी चली आ रही है. मैं आठवी पीढ़ी का जादूगर हूँ.

लेकिन मैं कहां मानने वाला था. पिताजी रोज एक कमरे में बंद होकर अभ्यास करते थे. उस कमरे में जाने की इजाजत किसी को नहीं थी. मैंने नियम बना लिया रोज उस कमरे के बगल वाले कमरे के रोषनदान से मैं उन्हें अभ्यास करते हुए देखता था. यह सिलसिला तकरीबन पांच साल तक चलता रहा. एक बार मां ने मुझे देख लिया लेकिन मेरी लगन देखकर वह चुप हो गई. सौभाग्य से इस के बाद मैं किसी की पकड़ में नहीं आया.

एक बार क्या हुआ कि ऐन षो के वक्त मेरे पिताजी के साथ जो लोग काम करते थे उन्होंने अपना मेहनताना बढ़ाने की और कुछ उल्टी सीधी षर्ते पिताजी के सामने रख दी, क्योंकि वह जानते थे कि यह पिताजी को ब्लैकमेल करने का अच्छा मौका है. इस वक्त पिताजी या तो उनकी मांगो को मान ले या फिर षो कैंसिल करें. मुझे अपने पिताजी की स्थिति बड़ी असहाय नजर आई. मैने पिताजी से जाकर कहा आप इन सबको भगा दीजिए. मैं आपका असिस्टेंट बन कर आपके साथ चलूंगा. पिताजी मेरी तरफ आंखे फाड़कर देखने लगे कि यह मैं क्या कर रहा हूँ. मुझे तो जादू के बारे में कुछ मालूम ही नहीं था. उनको विष्वास दिलाने के लिए मैंने उन्हें मेरे सारे खेल करके दिखाए. यह भी बता दिया कि बहुत दिनों से मैं रोषनलाल से छुपकर उनका अभ्यास देखता रहा हूँ. पिताजी ने मुझे डांटने के बजाय अपने सीने से लगा लिया. उस षो के लिए मैं ही पिताजी का असिस्टेंट बना. हर षो की तरह पिताजी का यह षो भी हिट रहा.

++++++++++++++++++

स्नेह बाल चित्र प्रतियोगिता-०१

हम इस अंक से छोटे बच्चों के लिए एक बाल चित्र प्रतियोगिता प्रारम्भ कर रहे हैं. जिसमें प्रत्येक माह एक विषय दिया जाएगा जिस पर आपकों एक चित्र बनाकर भेजना होगा. प्रथम स्थान पाने वाले बाल चित्रकार के चित्र को प्रकाशित किया जाएगा तथा द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले का नाम, पिता का नाम, कक्षा व पता छापा जाएगा साथ ही प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा. यह प्रतियोगिता ५ वर्ष से १२ वर्ष तक के उम्र के बच्चों के लिए ही होगी. इसके लिए बच्चों को अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य से उम्र लिखवाकर हस्ताक्षर कराना होगा. अपने चित्र के साथ नीचे दिया गया कूपन लगाना न भूलें अन्यथा स्वीकार्य नही होगा.

विषयः वृक्ष लगाओं

कूपन

संपादक, विश्व स्नेह समाज,
बाल चित्र प्रतियोगिता न०१, एल. आई.जी.-९३, नीम सरॉ कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
प्रतिभागी का नामः.................
पिता का नामः.....................
कक्षाः......स्कूल का नामः...पताः...

हिन्दी अपनी होकर रानी अब भी अंग्रेजी की नौकरानी

✍ cpekjhJ)k ,ca
MkW- ,u-,l-'kekZ eqdqZ

यह बड़े ही आश्चर्य का विषय हैं कि यदि कोई धारा १४४ का उल्लघंन करे तो वह तो दण्ड का भागी होता हैं जबकि इस ओर समूची भारतीय प्रशासनिक मशीनरी भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३४३ का खुलेआम उल्लंघन और उपहास कर रही हैं. हिन्दी आज सिर्फ दीन-हीन और वंचितों तक ही सिमट कर रह गई हैं. हिन्दी तो आज सिर्फ माली का ही पद दिला सकती हैं जबकि डाकिया के पद हेतु भी आज अंग्रेजी का ज्ञान जरुरी हैं. कैसे प्रवंचना हैं कि रानी बन जाने पर भी आज तक यह अपनी दासी अंग्रेजी के कदम धो रही हैं. अंग्रेजी को ही यदि राजभाषा बनाये रखना था तो फिर अंग्रजों को यहॉ से भगाने की जरुरत ही क्या थी? क्या इंग्लैण्ड में भी कोई कर्मचारी अपना सरकारी कार्य हिंदी में करता हैं? तो फिर क्यों भारतीय बुद्धिजीवी अंग्रेजी को ही यदि राजभाषा बनाये रखना था तो फिर अंग्रेजों को यहॉ से भगाने की जरूरत ही क्या थी? क्या इंगलैण्ड में भी कोई कर्मचारी अपना सरकारी कार्य हिन्दी में करता हैं? तो फिर क्यों भारतीय बुद्धिजीवी अंग्रेजी की आहें भरता रहता हैं. हम अंग्रेजी या कोई भी अन्य विदेशी भाषा सीखने का कदापि विरोध नहीं करते. विदेशी जानकारी प्राप्त करने के लिये बाहरी भाषाओं को सीखना या जानना अच्छी बात है और सभी भाषाएं हमारी मां के समान पूजनीय है. इसलिये अंग्रेजी जैसी सभी अन्य भाषाओं का कदापि तिरष्कार न करके उन सभी का आप आदर करें पर उनका प्रयोग आप अपने निजी कार्यो एवम पुस्तकालयों तक ही सीमित रखें; पर सरकारी कार्यो के लिए हिन्दी का ही प्रयोग करें क्योंकि राजभाषा का दर्जा तो हमने स्वंय ही हिन्दी को दिया हुआ है. इस भारत रूपी घर में खिड़की भले ही अंग्रेजी की हो जायें पर महाद्वार तो हिन्दी का ही हो. हमें इस बात से बराबर सचेत रहना होगा कि कहीं ये अंग्रेजी रूपी खिड़कियॉ महाद्वार न बन जायें. कुछ लोगों का यह भी कहना हैं कि हिन्दी में संस्कृत शब्दों की भरमार होने से यह बेहद जटिल भाषा हो गई हैं. वे शायद यह नहीं जानते कि बंगला और तमिल में तो संस्कृत शब्द हिन्दी की अपेक्षा कहीं अधिक है. यह सही है कि हिन्दी ने लगभग दस हजार विदेशी शब्द अपनाये हुए है. अंग्रेजी ने भी तो बीस हजार शब्द लैटिन और फ्रेंच के पचाये हुए हैं. अन्य भाषाओं के शब्द आत्मसात करने से भाषा कमजोर नहीं होती बल्कि उन आत्मसात किए हुए शब्दों को प्रचलित कर देने से वह भाषा और अधिक धनी, सशक्त और समृद्ध हो जाती है.

प्रायः देखने में आया है कि जो अधिकारी या नेता हिन्दी की बैठकों या सम्मेलनों में हिन्दी में अधिकाधिक काम करने का ढ़िढ़ोरा पीटते है; वही अपनी संतान को कन्वेंट या मिशनरीज के अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों में पढ़कार उन्हें अंग्रेजी समर्थक बना रहे हैं. उनका विचार है कि अंग्रेजी ही उच्च्च पद एवम सफलता की गारंटी हैं. इसलिये दिखावे वाले हिन्दी के वहीं पक्षधर भीतरी मन में अंग्रेजी की ही आरती उतारने को आतुर हैं. आज भी उनके घर वाली नामप्लेट अंग्रेजी की ही है. इन्हीं कारणवश राजभाषा के सिंहासन की वास्तविकता हकदारिन होकर भी हिन्दी अपनी २१ बहनों के साथ आज भी संसद के द्वारे भीख का कटोरा हाथ में लिये भीख में अपना हक मॉगती नजर आ रही है. कितनी खेद भरी बात है कि आजादी के दिवानों ने जो अंग्रेजी पत्थर ठुकराया था, उसी को आज हमने भगवान मानकर छाती से चिपकाया हुआ है. अंग्रेजी ही सफलता की कुॅजी है, यह सोचना सरासर भूल है. कितने ही लोगों और देशों ने बिन अंग्रेजी के भी नाम कमाया है? क्या प्लेटो, सुकरात, अरस्तु, सिकन्दर और ईसा को अंग्रेजी का ज्ञान था? क्या कालीदास, वेदव्यास, बाल्मिक, आर्यभट्ट भाष्कर, तुलसीदास और चाणक्य ने अंग्रेजी पढ़ी थी? क्या बाईबल, वेद, कुरान और जिन्दावेस्ता मूल रूप से अंग्रेजी में हैं? विज्ञान की सभी बड़ी पुस्तकें अंग्रेजी में नही बल्कि रूस में हैं. शिल्पकला में फ्रॉस सा क्या कोई और देश हैं? परिधान कला, मूर्तिकला और चित्रकला में जापान ही सिरमौर हैं. शिम्बुन और प्रावदा महा समाचारपत्र जर्मन और रूसी में हैं न कि अंग्रेजी में. मार्क्स, हीगल और प्लेटों से दार्शनिक जर्मन थे नक कि अंग्रेजी. हिन्दी की मानक और वैज्ञानिक लिपि देवनागरी ने आज लगभग पूरे विश्व को आकृष्ट किया हुआ हैं. लगभग डेढ़ सौ देशों में आज हिन्दी पढ़ी जा रही हैं. कितने ही विदेशियों की इसके प्रति गहन अभिरूचि हैं? हिन्दी लेखन सम्बन्धी उनकी सूची बेहन लम्बी है जबकि का

शेष पृष्ठ २७ पर.....

डॉ. ॐकार को साहित्य सागर की मानद उपाधि

अखिल भारतीय साहित्य संगम, उदयपुर, राजस्थान के द्वारा वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. ओमप्रकाश वरसैया ऊँकार, झाँसी को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए 'साहित्य सागर' की मानद सम्मानोपाधि से अलंकृत किया गया. डॉ. ऊँकार विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद सहित देश की कई संस्थाओं द्वारा साहित्य सेवा के लिए पूर्व में भी सम्मानित हो चुके हैं.

++++++++++++++++++++

प्रोत्साहन के समर्पण अंक का लोकार्पण

'प्रोत्साहन' के बहुप्रतीक्षित, विशिष्ट समर्पण अंक का लोकार्पण अन्धेरी पंश्चिम, मुंबई में महान शिक्षाविद्, अनुशासन प्रिय, महाराष्ट्र शासन द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक के रुप में सम्मानित प्रिसिपल श्री अजय कौल द्वारा हुआ. लोकार्पण करते हुए श्री कौल ने प्रोत्साहन के स्तर व गुणवत्ता की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह पत्रिका सचमुच पिछले ३७ वर्षो से नवोदित प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करती रही हैं. मैं इसके सम्पादक व प्रकाशक जीवितराम सेतपाल को साधुवाद देता हूँ. प्रोत्साहन की प्रथम प्रति रत्ना चड्ढ़ा को प्रदान कर उनका सम्मान किया गया. अन्त में प्रशान्त ने आभार प्रदर्शन किया.

++++++++++++++++++++

चक्रव्यूह का लोकार्पण

प्रोत्साहन की सम्पादक श्रीमती कमला सेतपाल की प्रथम कृति 'चक्रव्यूह-हास्य व्यंग्य संग्रह का विमोचन बड़ी धूमधाम से हुआ. विमोचन प्रोत्साहन कार्यालय में कु. महिला सेतपाल ने किया. लोकार्पण की रस्म अदायगी सुप्रतिष्ठित

श्री श्याम विद्यार्थी को स्व० हरि ठाकुर स्मृति सम्मान

इलाहाबाद दुरदर्शन के वरिष्ठ निदेशक एवं वरिष्ठ साहित्य संत श्री श्याम विद्यार्थी को हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य, समाज, देश व विश्व शांति की अमूल्य सेवा के लिए पुष्पगंधा प्रकाशन, राजमहल चौक, कवर्धा, छत्तीसगढ़ के द्वारा 'स्व० श्री हरि ठाकुर स्मृति, सम्मान से सम्मानित किया गया. श्री विद्यार्थी के इलाहाबाद दूरदर्शन के निदेशक के पद को संभालने के बाद से इलाहाबाद दूरदर्शन आम आदमी जोड़ने में काफी सफल हुआ हैं. क्षेत्रीय दर्शक जो अब तक क्षेत्रीय प्रसारण से दूर रहा करते थे, अब टी. वी. खोलने कर बैठने पर मजबूर हो गये हैं. श्री विद्यार्थी को अब

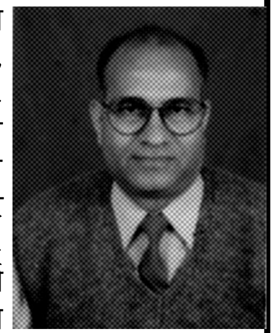

तक सैकड़ो संस्थाओं के संस्थाओं के द्वारा पूर्व में ही सम्मानित किया जा चुका हैं.

मोटी आई सिन्धु धारा का लोकार्पण

मुम्बई. महाशिवरात्रि के शुभअवसर पर हिन्दी-सिन्धी के जाने माने साहित्यकार एवं प्रोत्साहन के प्रधान सम्पादक जीवित राम सेतपाल की नवीनतम कृति 'मोटी आई सिन्धु ६ ाारा' ग़ज़ल संग्रह का लोकार्पण सीता सिन्धु भवन में किया गया. विमोचन साहित्यकार श्री मनोज सोनकर ने की और प्रथम प्रति लेखिका श्रीमती कमला सेतपाल को दी. काव्य-गोष्ठी में डॉ. मनोज सोनकर, श्री रामकृष्ण दलाल, श्रीमती कमला सेतपाल, जीवित राम सेतपाल आदि ने कवितायें सुनायी. आभार सुयश श्री जी.एस. ने प्रकट किया.

++++++++++++++++++++

सम्मानार्थ प्रविष्टि आमन्त्रित है

विन्ध्यवासिनी जल कल्याण ट्रस्ट (पं०) ई.२०६, कृष्ण विहार, नई दिल्ली-४१, ने देष के वरिष्ठ प्रतिभाषाली साहित्यकारों से सम्मानार्थ प्रविश्टि आमन्त्रित किया है. देय सम्मान इस प्रकार है-मां विन्ध्यवासिनी साहित्य गौरव सम्मान, बाबा दीप सिंह स्मृति सम्मान, सरस्वती पांन्डेय स्मृति सम्मान, सुरेन्द्र कौर स्मृति सम्मान, पं० अवधेष नारायण तिवारी स्मृति सम्मान, सरदार बलवीर सिंह स्मृति सम्मान.

प्रतिभागी गण प्रत्येक दषा में ३१ जनवरी ०७ तक अपना जीवन परिचय, एक नवीनतम चित्र, दो पोस्टकार्ड, ३५ रुपये का डाक टिकट, अपने उत्कृश्ट कृति की दो प्रतियां पंजीकृत डाक द्वारा भेज दें. चयनित विद्वानों को रजत मेडल भी दिए जायेंगें. अप्रैल ७ में एक भव्य समारोह में २१ चयनित विद्वानों को अलंकृत किया जायेगा.

सुशील कुमार पान्डेय
निदेषक

सिन्धी के मान्यवर साहित्यकार तथा सिन्धी की शुद्ध साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका 'सिंधूँ के सफल सम्पादक श्री ठाकुर चावला ने किया. श्री ठाकुर ने राष्ट्रभाषा से मातृभाषा की ओर मुड़ने पर सेतपाल का स्वागत करते हुए उनकी रचना प्रक्रिया की शंसा की तथा जनता जर्नादन को कृतियॉ खरीदकर पढ़ने की भी सलाह दी. श्री सेतपाल ने सिन्धी साहित्य के तेज तर्रार कवि श्रीकान्त को प्रथम प्रति देकर सम्मानित किया.

++++++++++++++++++++

जीवितराम सेतपाल सम्मानित

राजस्थान सिन्धीी अकादमी, जयपुर द्वारा वर्ष २००५-०६ के लिए अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित सिन्धी भाषा में एकांकी लेखन के लिए सर्वप्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. इसमें ढाई हजार रुपये, स्मृति चिन्ह व प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया. अकादमी के सचिव श्री हासानन्द जेठाणी ने शुभकामनाये दी. वर्ष २००५ के लिए श्री सेतपाल को ऑल इण्डिया स्मॉल एण्ड मीडियम जर्नलिस्ट फेडरेशन, अजमेर के राष्ट्रीय अधिवेशन में 'भीष्म साहित्य रत्न' के सम्मान से पॉचवी बार सम्मानित किया गया. श्री सेतपाल का यह २५वॉ सम्मान हैं. इसके पूर्व वे भूतपूर्व प्रध ाानमंत्री द्वारा भी पुरस्कृत हो चुके हैं.

++++++++++++++++++++

डॉ पाठक को मिला सम्मान

हिन्दी साहित्य प्रेरक के निदेशक, 'रविन्द्र ज्योति' मासिक के सम्पादक और 'जीवन तेरे कितने रंग' के लेखक डॉ. केवल कृष्ण पाठक को उत्तरांचल के प्रतिष्ठित लेखक एवं 'साहित्य प्रभा' त्रैमासिक के सम्पादक चन्द्र सिंह तोमर 'मयंक' के कर कमलों द्वारा तीसरा राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान समारोह द्वारा 'साहित्य प्रभा सर्वोच्च ज्ञानरत्न सम्मान-२००६' साहित्य सदन देहरादून में प्रदान किया गया. डॉ. श्याम सखा 'श्याम' सम्पादक 'मसि कागद' भी उस समय उपस्थित थे. सम्मान के साथ 'मयंक' द्वारा रचित मानवीय संवेदनाओं की अनमोल कहानियों का संग्रह 'यशोधन' की प्रति डॉ. पाठक एवं डॉ. श्याम को भेंट की गई. डॉ. पाठक और डॉ. श्याम साहित्यिक यात्रा के अवसर पर सहारनपुर में 'सामाजिक आक्रोश' के सम्पादक एवं प्रेस क्लब के प्रधान श्री रमेश चन्द्र 'छबीला' के साथ उनके कार्यालय में साहित्यिक चर्चा की गई.

++++++++++++++++++++

काम बेमिसाल कर/ऐसा कुछ कमाल कर

डॉ० श्याम सखा 'श्याम' की लेखनी ने पिछले सप्ताह कुछ ऐसा ही कर दिखाया. हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा सन् २००५-०६ के पुरस्कारों की घोषणाओं में डॉ० श्याम की तीन कृतियों को पुरस्कृत करने की घोषणा की गई. तीनों पुरस्कार इस प्रकार है-कोई फायदा नहीं- वर्ष का श्रेष्ठ-दस हजार रुपए व प्रशस्ति पत्र, शाल श्रीफल आदि.**महात्मा**-सर्वश्रेष्ठ कहानी प्रथम पुरस्कार-३५०० रुपए व प्रशस्ति पत्र आदि।**नाविक के तीर**-लघुकथा संग्रह-पाण्डुलिपि पुरस्कार, ७५०० रुपए व प्रशस्ति पत्र आदि

साथ ही इस वर्ष राष्ट्रधर्म मासिक लखनऊ द्वारा आयोजित श्री राधेश्याम चितलंगिया कहानी प्रतियोगिता में उनकी कहानी-महेसर का ताऊ को द्वितीय पुरस्कार ३००० रुपए नदक व प्रशस्ति पत्र जो अक्टूबर में लखनऊ में दिया जाएगा, की घोषणा की गई.

डॉ०केवल कृष्ण पाठक, सम्पादक, रवीन्द्र ज्योति

++++++++++++++++++++

भाषारत्न सम्मान हेतु श्री नन्दलाल भारती का चयन

जैमिनी अकादमी, पानीपत की चयन समिति ने अपने प्रतिष्ठित सम्मान 'भाषा रत्न' से साहित्यकार श्री नन्दलालराम भारती को अखिल भारतीय स्तर पर सम्मानित करने हेतु चयनित किया है. यह सम्मान श्री भारती को अखिल भारतीय भाषा समारोह में प्रदान किया जायेगा.

❍❍❍❍

सुप्रभात

कवि एवं उनकी कविताएं (भाग 2)

कवियों का सचित्र परिचय सहित उनकी कविताओं का अनूठा संकलन सहयोगी आधार पर प्रकाशित किया जा रहा है जो कई खण्डों में छपेगा। इसी प्रकार कहानी एवं लघुकथाओं का भी अलग—अलग संग्रह प्रकाशित किया जाएगा. कृपया अपनी रचनाएं हमें निम्न पते भेंजे अथवा सम्पर्क करें। विस्तृत जानकारी के लिए जबाबी टिकट लगें लिफाफें के साथ लिखें: सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **कानाफुसीः** 9335155949

व्रत पकवान

साबूदाने के बडे

सामग्रीः साबूदाना-एक कप
भुनी मूंगफलीः आधा कप
उबला हुआ आलूः एक
हरी मिर्चः ७-८
नमकः स्वादानुसार
तलने के लिए तेल
बनाने में कुल समयः ४५ मिनट
विधिः साबूदानें को धों ले और पूरा पानी निकाल लें.

एक घंटा भिगोने के बाद उसे फिर छानें और उसमें एक कप साफ पानी डाल कर २-३ घंटे और भिगोये रखें. उसे निथार लें. तेल को छोड़कर हर चीज उसमें मिलाएं.

उसे चपटा-गोल आकार दे दें. हल्की आंच पर उसे तल लें. हलका भूरा होने पर पलट कर तलें और थोड़ा कुरकुरा होने पर बाहर निकाल लें. अब इसे मूंगफली की चटनी के साथ परोसें.

✍**श्रीमती जया 'गोकुल'**,निदेशक, स्नेहांगन कला केन्द्र, इलाहाबाद

बिजनेस में शामिल करें पर्यावरण भी

✍वाल्टर वियेरा

वाराणसी के ताज गंगा होटल के एक कमरे में टंगे संदेश पर मेरी नजर पड़ी जिस पर लिखा था-वातावरण के संरक्षण में हमारा सहयोग दें. इस संदेश ने मेरा ध्यान एकाएक इस बात की ओर दिलाया कि दुनिया में, कुल पानी का दो प्रतिशत से भी कम साफ पानी के तहत आता है. साथ ही भारत सहित दुनिया के देशों में पानी की कमी दिन-ब-दिन एक बड़ी समस्या बनती जा रही है. पानी को बचाने की एक ही तरकीब समझ में आती है-संरक्षण. आगे उस संदेश में पानी के सुरक्षित भंडारण के लिए कुछ निर्देश दिए गये थे जो इस प्रकार थे-

दांत साफ करते समय नल बंद कर दें. इससे ५-१० लीटर पानी बचेगा.

हाथ-मुंह धोते समय वॉश-क्लॉथ का प्रयोग करें व आवश्यकता न होने पर नल बंद कर दें. इससे ८-१५ लीटर पानी बचेगा.

शेव करते समय एक बार पानी ले लें व नल बंद कर दें. इससे ५०-७० लीटर पानी बचेगा.

नहाते समय नल लगातार चला कर न रखें. इससे ५०-७० लीटर पानी बचेगा

यदि आपका नल लीक कर रहा है तो तुरंत उसे ठीक कराएं. इससे ३००-४०० लीटर पानी बचेगा.

इसके अलावा उस कार्ड पर वातावरण को साफ रखने व प्राकृतिक स्रोतों को बचाए रखने के लिए और भी बहुत से निर्देष दिए गये थें.

मुंबई में गवर्नमेंट हैंडीक्राफ्ट एंपोरियम के पार्सल प्राप्त करने वाले केंद्र में जाने पर वह आपको बदले में एक आकर्षक छापे वाला प्लास्टिक बैंग देंगे. यदि आप किसी ऊंची ब्रांड का कोई कपड़ा या जूते खरीदते हैं, तो वह आपको एक आकर्षक से पेपर बैंग में दिया जाता है.

❍❍❍

भ्रष्टाचार का राष्ट्रीयकरण का शेष....

आज कल इस तरह के चुनावी खर्चो को व्यवसायिक इन्वेस्टमेंट माना जाता है. उसके बाद उन्हें तेलगी, तहलका से लेकर रिलायन्स मोबाइल तक किसी भी कड़ी से जोड़ा जा सकता है. प्रश्न यही कि इस रिश्वतखोरी और हरामखोरी को, देशघातकी प्रवृति को लोकशाही के कलंक को, क्या किसी कानून से रोका जा सकेगा? बात वहीं जा पहुचती है जहां से शुरु हुई है कि इन सबके पीछे परिस्थिति से अधिक इन्सानी नीयत को कारण रुप में देखा जाना चाहिए. जहां पार्टियां उम्मदवार व जनता स्वयं इस बेइमानी की शिकार है उसे कौनसा कानून रोक पाएगा इसके लिए एक ही सूत्र "रिश्वतमेव जयते" जिस लेकर भ्रष्टाचार का राष्ट्रीयकरण हो चुका है. इसे स्वीकार करना देश की मजबूरी हैं.

हिंदी अपनी होकर........

हम भारतीय इसके विमुख हो रहे हैं. हमारे संविधान का अष्टम अनुसूची में वर्णित मान्य २२ भाषाओं में भी अंग्रेजी भाषा सम्मिलित नही हैं. फिर भी हमने क्यों हिन्दी को अग्रेजी की स्टेपनी बनाया हुआ है? आखिर कब इसे अंग्रेजी से अपना ताज और तख्त अर्थात वास्तविक हक प्राप्त होगा? तो आईये आज हम यह शपथ लें कि हिन्दी का जो ध्वज आज हमनें अपने हाथों में थाम लिया हैं उसे अब हम किसी भी कीमत पर नहीं झुकने देगें.

अब तू मेरे हाथों से नहीं बचेगा

घबराया हुआ पति (डॉक्टर से)- डॉक्टर साहब, क्या आपको यकीन है कि मेरी पत्नी बच जाएगी?

डॉक्टर (पति से)-यह तो मैं विष्वास के साथ नहीं कह सकता मगर वह नीद में आपका नाम ले कर बड़ाबड़ा रही थी कि अब तू मेरे हाथों से नहीं बच पाएगा.

❍

तब और अब

चुनाव से पहले नेता जी का वजन मात्र साठ किलोग्राम था. शरीर में हकलाहट तथा चेहरे पर पीलापन झलकता था. मानों वे पीलिया रोग से ग्रस्त हों.

लेकिन जब नेता जी चुनाव जीतकर कैबिनेट मंत्री बने तो सत्ता का सुख पाकर कुछ अरसा बाद ही उसके शरीर से हकलाहट छूमंतर हो गई और चेहरा टमाटर की तरह लाल हो गया. अब मंत्री जी का वजन साठ किलोग्राम से बढ़कर नब्बे किलोग्राम हो गया था.

++++++++++++++++++++

देश भक्ति

पड़ोसी मुल्क के प्रधानमंत्री के एक भारत विरोधी बयान पर हमारे देश की सभी राजनैतिक पार्टियों ने कड़ा प्रतिवाद किया. अपनी देशभक्ति का परिचय देते हुए इन पार्टियों ने प्रतिवाद स्वरुप धरने एवं जुलूस भी निकाले. कुछ पार्टियों ने तो पड़ोसी मुल्क के प्रधानमंत्री का पुतला भी जलाया.

लेकिन यह बात अलग है कि जब पुतला जलता और उससे पटाखें छूटते तो इन पार्टियों के नेता देशभक्ति को भूलकर 'भारत माता की जय' बोलने के बजाय अपनी पार्टी तथा अपने नेताओं की जय-जयकार करने में लग जाते थें.

++++++++++++++++++++

ईमानदारी

सत्य और झूठ में ईमानदारी को लेकर बहस चली हुई थी. सत्य कह रहा था कि आज की दुनिया से ईमानदारी मर चुकी हैं.

सत्य की इस बात को नकारते हुए झूठ कह रहा था कि ईमानदारी न पहले कभी मरी थी और ना ही आज मरी है. वह तो आज भी बेईमानी के धंधे में खूब फल-फूल रही हैं.

✍रोहित यादव, पत्रकार, हरियाणा

धंधा

उन १० महिलाओं को लॉक अप में बंद करते हुए थानेदार ने कहा-धंधा करते तुम्हें शरम नहीं आई.

"काहे को डांटते हो थानेदार साहब." उनसे एक महिला बुलन्दी से बोली. "अपना शरीर बेच रही थी. उस रेस्ट हाउस में, वेश्याओं का अड्डा बना रक्खा था, तुम लोगों ने. जबकि तुम सब अच्छे घरानों की हो."

"अच्छा घराना होता तो हम धंधा थोड़ी न करते थानेदार साहब."

"अरे तुम सब शादी शुदा हो. किसी न किसी की जोरु हो. फिर अपने आदमियों को नंगा करने पर तुली हुई हों."

"जब आदमी ही हमें इस धंधे में डाले तो हमारा क्या कसूर हैं हवलदार साव." वही औरत अपना रात खोलती हुई बोली और इसमें आदमी का दोश भी नहीं हैं थानेदार साहब.

"तो फिर किसका दोश हैं."

"इस पापी पेट का." पेट बताती हुई वह महिला बोली-"हमारी गरीबी, फटेहाली और काम नहीं मिलना इसके लिए जिम्मेदार हैं."

"बस-बस बहुत हो चुका गरीबी, फटेहाली का नाटक करते हुए." थानेदार झल्लाकर बोला-"गरीबी, फटेहाली के नाम पर तुम अपने मर्दो की ऑखों में धूल झोंककर धंधा करती हो और अपने आदमियों को बदनाम करती हों. फिर काम तो बहुत मिल जाता है. मगर जब बिना मेहनत किये बहुत सारे पैसे आ जाते हैं. तब काम करके मेहनत कौन करें?"

"आप का जाने थानेदार साब." वही औरत बहस करती हुई बोली. गोरमेंट की नौकरी है आपकी. खाकी वर्दी का रोब हैं आपका. ऊपरी आमदनी भी कर लेते हो वह अलग से. इसलिए भूख, गरीबी, लाचारी क्या होवे. आप नहीं जानते हैं.

"चुप रह हरामजादी" थानेदार उसे गाली देते हुए बोला-मुझे ही उपदेश दे रही है. दो कौड़ी की औरत.

"मैं आपको का उपदेश दूं थानेदार साब." वही औरत बोली-हम तो बहुत छोटे लोग है इसलिए बदनाम हैं.

"ठीक हैं ठीक हैं बहसबाजी मत कर जो कुछ कहना है अदालत में कहना. " थानेदार थोड़ा नम्र पड़ते हुए बोला-एक तो शरीर बेच रही थी और अब बड़ी सती-सावित्री बन रही हैं. मगर तुम सबको अच्छी तरह जानता हूॅ. अपने मर्दो की आंखों में धूल झोंककर ऊपरी आमदनी करने के लिए वेश्यावृति का धंधा अपना लिया. अरे वेश्यावृति ही कना है तो लायसेंस लेकर किसी कोठे पर बैठ जाओं. करो फिर खूब धंधा.

थानेदार का धारा प्रवाह भाषण चल रहा था. मगर वे औरतें जो रेस्ट हाउस में देह का धंधा करती पकड़ी गई, लॉकअप में बद कर दिया. थानेदार ने उन धंधा करती औरतों को पकड़कर जैसे बहुत बड़ा काम किया हो. यह उन औरतों को जता रहा था.

✍रमेश मनोहर, जावरा, म.प्र.

कूपन सं. 10 सितम्बर 06

विश्व स्नेह समाज

अश्विनी नक्षत्र वाले मृदुभाषी व अपार धन दौलत के स्वामी होते हैं

✍पं0 विजय भांबी

राशि पथ (जोडियक) एक अंडाकार वृत्त की भांति है. इसे १२ भागों में बांटकर राशियां बनी हैं. राशि के अपने-अपने स्वभाव, गुण-अवगुण होते हैं. हर ग्रह की अपनी-अपनी राशि होती है और अपना कारकत्व होता है. किंतु एक ही राशि के दो व्यक्ति अलग-अलग स्वभाव रखते हैं. उनका भाग्य भी भिन्न-भिन्न होता है. पूरी मानव जाति १२ भागों या राशियों में बंटी तो है किंतु कोई भी दो पुरुष आसानी से एक ही स्वभाव, धन दौलत के स्वामी या समान भाग्य रखने वाले नहीं होते. मुख्य रुप से यह भिन्नता नक्षत्रों के कारण पैदा होती है और हर नक्षत्र भी चार भागों में विभाजित होता है. आप यह अवश्य जानना चाहेंगे कि क्यों आप भिन्न हैं अपनी ही राशि के दूसरे व्यक्ति से. आप अपने जन्म नक्षत्र को जानें. यह मूल जानकारी पत्री में लिखी है. बस नक्षत्र का नाम पढ़े और देखें कि राशि पथ आपके लिए इतना भिन्न क्यों है? इससे आप अपने भाग्य का सही मूल्यांकन कर सकते हैं.

समस्त ग्रह भ्रमणशील हैं और नक्षत्र स्थिर. प्रत्येक राशि में सवा दो नक्षत्र के हिसाब से २७ नक्षत्र बनते हैं, अभिजित को मिलाकर २८ होते हैं. पूरा अंडाकार वृत्त ३६० डिग्री का होता है और एक नक्षत्र १३.२० डिग्री का. हर नक्षत्र चार हिस्सों में बंटा हैं. नक्षत्रों के नाम हैं- अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुश्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्र, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वषाढा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिशा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती. इस तरह से ये २८ नक्षत्र हैं. मेश आदि राशि में सवा दो नक्षत्र का समावेश होता है. जैसे मेश में अश्विनी, भरणी और कृतिका का चौथाई भाग होता हैं. इस कारण मेष राशि में अश्विनी नक्षत्र में पैदा हुए व्यक्ति शुक्र की अधीन होते हैं और कृतिका में पैदा होने वाले सूर्य से संबंधित होते हैं. मेष का स्वामी मंगल ही होता है. अतः अश्विनी में पैदा होने वाले मंगल-केतु, भरणी में मंगल-शुक्र और कृतिका में मंगल-सूर्य के अधीन आ जाते हैं. ध्यान से देखें तो एक ही राशि में मेष में चार ग्रहों का प्रभाव रहता है जो तीन भागों में बंट जाता हैं. यही कारण है कि मेष में जन्में व्यक्ति प्रत्यक्ष तौर पर तीन तरह के हो सकते हैं और सूक्ष्म में दस प्रकार के, क्योंकि मेष के सवा दो नक्षत्र ९ पाद में विभाजित होते हैं और दसवां भाग स्वामी मंगल रहता है. इसी प्रकारा हर राशि में पैदा होने वाले व्यक्ति १० प्रकार के होते हैं. सही पूंछे तो राशिफल भी नक्षत्र पर आधारित ही सही-सही उतरता है. राशि और नक्षत्र का भेद तो आपने संक्षेप में जान लिया हैं, क्योंकि यह उदाहरण आपको समझना अनिवार्य था, राशि नक्षत्र भेद की तह तक जाने के लिए. अब हम यह जानेगें कि यदि आपका नक्षत्र अश्विनी से लेकर रेवती तक है, तो आपका भाग्य कैसा होगा, आप किस प्रकार के चरित्र के होगें और कौन सा कैरियर अपना सकते हैं.

पुरुष व स्त्री के लिए एक ही नक्षत्र थोड़ा अलग-अलग फल देते हैं. यदि आपका नक्षत्र अश्विनी हैं, तो अश्विनी में अश्व अर्थात् घोड़े का आभास होता है. अश्विनी नक्षत्र मंगल की राशि व केतू के स्वामीत्व के अधीन आता है और मंगल शक्ति का प्रतीक हैं अर्थात् मेष राशि के अंतर्गत अश्विनी नक्षत्र में पैदा होने वाले शारीरिक शक्ति से परिपूर्ण होते हैं. आप पुरुष हैं तो आपके चेहरे पर तेज होगा, आंखे बड़ी व चमकीली होगी, माथा बड़ा और नाक भी लंबी होगी. देखने में भले ही शांत हो मगर अंदर से सक्रिय होगें. प्रभु में विश्वास भी रखते हैं और अपने फैसले पर अटल रहते हैं. बुद्धिमान होते हुए भी कभी राई का पहाड़ बना डालते हैं. पढ़ाई-कमाई करने में आप हरफनमौला होते हैं. कभी कंजूस व कभी खर्चीले दिखते है. आपके परिवार के सदस्य आप से डरे रहते हैं और आपको अधिक पंसद नहीं करते. इसका कारण आपकी हठ करने की प्रवृत्ति होती है. किसी को पिता के प्यार से वंचित रहना पड़ता हैं.

अकसर ३० वर्ष की आयु तक जीवन संघर्षमय होता है. इसके बाद आप प्रगति के पथ पर धीरे-धीरे अग्रसर होते रहते हैं. यदि जन्मपत्री में बाकी त्रुटियां नहीं हैं तो आपकी शादी २५-३० वर्ष की आयु में होनी तय हैं. इस नक्षत्र वालो में पुत्र अधिक उत्पन्न होगें. स्वास्थ्य आम तौर पर ठीक रहता है फिर भी सिरदर्द माइग्रेन और हृदय रोग अधिक होने की संभावना रहती है.

यदि आप महिला हैं तो आपकी आंखे छोटी हो सकती है, चमकीली मगर मछली की तरह. बाकी हावभाव पुरुषों की भांति ही होगें. मधुरभाषी होने के कारण कई व्यक्ति आपके नजदीक आ जाते हैं. आपका स्वभाव शांत और अत्यंत चंचल भी हो सकता हैं. आप स्पष्टवादी, बड़ो का सम्मान करने वाली और समाज के नियमों को मानने वाली हैं. पर्याप्त धन-दौलत आपके पास हो ही जाती हैं.

२५ से ३० वर्ष की आयु में विवाह होने की संभावना होती है. इससे पूर्व आपके प्रणय या विवाह संबंधी प्रसंगों में दिल को चोट पहुचने का खतरा भी रहता हैं. स्वास्थ्य सामान्य तौर पर ठीक रहेगा. किंतु आपको अग्नि से संबंधित उपकरणों से सावधान रहना चाहिए. वाहन चलाने में सतर्क नहीं हरे तो दुर्घटना हो सकती है. मासिक धर्म की शिकायत अकसर हो सकती है. अश्विनी में आए ग्रह मूल जन्मपत्री में या गोचर में आकर तरह-तरह के प्रभाव डालते हैं.

बाइस्कोप

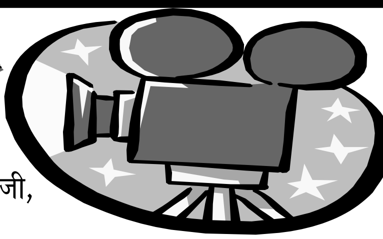

✍डी.पी.उपाध्याय, **'मगन'** मनीजी,

दिखाता हूँ देश-दशा दर्शन, बन्द ऑख से आप सरकार देखिए।
अशोभनीय नहीं यह सिरियल जैसा, बेशक आप सपरिवार देखिए।
हर जगह है खीच तान, बात बात पर यहॉ विवश सरकार देखिए।
हाथ में पीकदान लिए सत्ता समीप, हर किस्म के चाटुकार देखिए।
जहॉ तक सोचे गिर सकते नेता, कुछ भी नहीं इन्हें नागवार देखिए।
लोक सदन में गपियाते कुछ डाकुओं को, एक दम साकार देखिए।
घुटना बदलवाकर घुटना टेकती, बौधिकता यहॉ लाचार देखिए।
अबकी बार हिला के रख देंगे, विपक्ष की सौवी धौस बेकार देखिए।
पुलिस का भगोड़ा अपने घर बैठा है, घर में अपराधी फरार देखिए।
चहुँओर बेईमानी; चोरी; घूस फिर भी, चल रहा देश चमत्कार देखिए।
हर पन्ना हत्या बलात्कार से सुसज्जित प्रतिदिन का अखबार देखिए।
यह महिमा है ऊंची पहुँच का, पटवारी से पिटता तहसीलदार देखिए।
गले में एक दाम की तख्ती लटकाए, दूल्हों का गर्म बाजार देखिए।
बिना पढ़े हासिल होती डीग्रियॉ, शिक्षा का बढ़ता व्यापार देखिए।
बेकारी भत्ता के रोजगार में खड़े, तसल्ली से बेरोजगकार देखिए।
कथित इंगलिश मीडियम स्कूलों का, यह कुक्कुरमुत्ता संसार देखिए।
दिलाकर अंग्रेजी स्कूल में दाखिला गोबर का, हलकान होरी कहार देखिए।
महलों में रहने वाले राम भक्तों, छप्पर के नीचे राम दरबार देखिए।
किसी को कहीं भी 'आई लव यू', बोलने का वैलेन्टाइन अधिकार देखिए।
हल्की बारिस में नदी नहीं, नाले से, बम्बई में बाढ़ की बहार देखिए।
अब की होली साली संग होगी, जीजा का उत्सुक इन्तजार देखिए।
जल गयी दाल कबिताई के चक्कर में, बाथरुम से बीबी की फटकार देखिए।

सी.ए.टी.सी. बमरौली, इलाहाबाद

गीत

वही आदि है, वही अंत है
एक शून्य ही नीरव होकर,
भटक रहा था दिग्दिगन्त है।।
बदला वह संघटक तत्व में
उसने ही ब्रहमाण्ड बनाया,
काल रुप में परिणत होकर
पृथ्वी में जड़-चेतन लाया;
द्रव्य और ऊर्जा का मिश्रण
लाया जीवन का बसंत है।।
वही आदि है वहीं अत है।।
जल में अग्नि, अन्नि में जल है
वायु उसी में रही समायी,
सभी अभिन्न भिन्न भी होकर
जीवन की प्रक्रिया बनायी;
वही विभक्त विविध रुपो में
वही जिताता, वहीं हंत है।।
वही आदि है, वहीं अंत है।।
बदले कितने रुप प्रकृति ने,
कितने जीव जन्तु उपजाये
मानव को अपनापन देकर
प्रकृति पुरुष के संग बनाये,
बोध कराया निज सत्ता का
जो सबमें व्यापक ज्वलंत है।।
वही आदि है, वहीं अत है।।

परमलाल गुप्त, सतना, म.प्र.

आतंकवाद मिटाने के लिए आंतकवादियों को नहीं बल्कि उसकी जड़ को मिटाइएः दाऊजी

साफ सुथरे पुरुषों की बजाय शादी शुदा पुरुषों पर फिदा होती है युवतियां

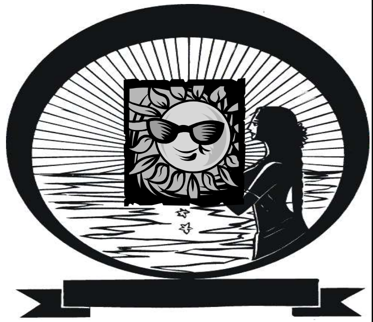

लाजिमी है कि अगर विवाहित पुरुषों की तुलना चूहे से की जाए तों मुंह का जायका खराब हो जाए लेकिन वैज्ञानिकों ने चूहों की मार्फत ही इस गुत्थी को सुलझाने में सफलता प्राप्त करने का दावा किया हैं कि आखिर महिलांए उन पुरुषों पर ही क्यों जान छिड़कती हैं जिनकी पत्नियां होती हैं. अनुसंधानकर्ताओं के मुताबिक अनुवांशिक तौर पर महिलाओं में उन पुरुषों की ओर खिंचे चले जाने की स्वाभाविक प्रकृति होती है जिनमें पत्नियों की त्वचा की महक होती है. हॉलीवुड स्टार ऐंजलिना जॉली का उदाहरण इस अवधारणा को विश्वसनीयता प्रदान करता है.

बताया जाता हैं कि वह चर्चित फिल्म 'मिं. एंड मिसेज' के सेट पर ब्रैडपिट की दीवानी हो गयी जबकि पिट पहले से ही खूबसूरती की मल्लिका और अभिनेत्री जेनिफर एनिस्टन का पति था. एक भारतीय मनोचिकित्सक ने भी हॉलीवुड की कई अभिनेत्रियों के मामलों का जिक्र किया जिनके विवाहित फिल्म सितारों से दीर्घकालिक रिश्ते रहे. इस अवधारणा को और स्पष्ट करते हुए वैज्ञानिक कहते हैं कि महिलाओं को 'साफ सुथरे' पुरुषों के बजाये वे पुरुष ज्यादा आकर्षक नजर आते हैं जिनमें दूसरी महिला की खुश्बू होती हैं. स्नायु तंत्र का विशेषज्ञ डॉ. डोनाल्ड पैफ द्वारा एकत्र किये गये आंकड़े बताते हैं कि चुहिया अन्या चुहियाओं की रुचियों का इस्तेमाल और यहां तक कि उनकी नकल तक कर सकती हैं.

इसे इस रुप में भी देखा जा सकता है कि कोई महिला पुरुष की किसी अन्य महिला की पसंद पर भरोसा करती हैं. और तो और वह किसी अन्य चुहिया से संबंध रखने वाले उन चूहों तक से खफा नहीं होती जो त्वचा रोग तक से ग्रस्त होते हैं. जबकि सामान्य स्थिति में चुहिया किसी भी अस्वस्थ चूहे को पास फटकने तक नहीं देती. वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि आखिर क्यों सदियों से 'रखैलों' ने एकल संबंधो की सुरक्षा छतरी तक को ठुकराया हैं. इस गुत्थी की ताली ऑक्सीटोसिन रसायन में है जिसे लगाव पैदा करने वाला हार्मोन कहा जाता है. ऑक्सीटोसिन बच्चे को जन्म देने, दूध पिलाने और यौन संबंध कायम करने के दौरान किसी महिला के शरीर से निकलता है और यह रसायन दीर्घकालिक प्रेम संबंधो के लिए काफी अहम है. जाहिर है कि पत्नी से संपर्क के दौरान विवाहित पुरुष में इस रसायन की गंध आ जाती है और इसके चलते महिलांए उनकी ओर खिंची चली जाती हों.

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्राणीविज्ञान के प्राध्यापक डॉ. बैरी कैवर्न कहते हैं 'यह भी संभव है कि महिलाएं पहनावा प्रभाव के आधार पर पत्नी वाले पुरुषों का चयन करती हो. दूसरे शब्दो में किसी पुरुष में किसी अन्य महिला से आयी गंध महिलाओं में यह विचार लाती हो कि वह पुरुष कोई दूसरी महिला हैं.

+++++++++++++++++++++

कमजोरी को भगाता है केला

केला के सेवन से बात-पित्त का वेग शान्त होता है. एक केला रोज खाने से स्वास्थ्य लाभ होता है. शरीर का वजन बढ़ता है. श्वेत प्रदर रोग में केला खाना बहुत लाभ करता है. इसका सेवन जहर का असर कम करता है. रुके पेशाब को खोलने में इसकी जड़ का लेप नाभि के नीचे करने से लाभ होता है. दस्त में कच्चे केले की सब्जी खाने से लाभ होता हैं. शरीर की दुर्बलता दूर करने में केला अति उपयोगी है.

अफीम या दूसरे जहरीलेपन को दूर करने के लिए केले के पेड़ का रस पिलाने से लाभ होता है.

+++++++++++++++++++++

रोगों को रोके बादाम

बादाम शरीर को बदल देने वाला होता है. इसको पीस कर लेप करने से चमड़ी के रोगों में लाभ होता है. धातुवर्धन एवं बाजीकरण के लिए बादाम का प्रयोग लाभकारी है. रात को पांच बादाम पानी में भिगोकर कर रखे सवेरे छील कर पत्थर पर घिस कर दूध में मिला कर पीने से बल और बुद्धि बढ़ती है. पांच बादाम दस से पन्द्रह रोज दूध से लेने से शरीर मजबूत होता है. रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है.

यह स्तंम्भ आपका हैं. आप इस स्तम्भ के तहत अपनी क्षेत्र की कुछ अनोखी घटनाएं, कुछ खास खबरें आदि दे सकते हैं. अच्छी घटनाओं व खबरें भेजने वाले को पुरस्कृत भी किया जाएगा.

मरीज को जानकारी देना डॉक्टर का फर्ज

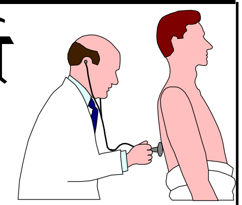

जनवरी, १९९१ में रमेश भाई हरमनभाई कछिया अपनी आंख के इलाज के लिए एक डॉक्टर श्याम कुमार से मिलें. डॉक्टर ने उन्हें बताया कि एक छोटे से ऑपरेशन से उनकी समस्या दूर हो जाएगी. डॉक्टर के मुताबिक रमेशभाई ग्लूकोमा नामक नेत्ररोग से पीड़ित थे. डॉक्टर ने उनकी दोनों आंखो का ऑपरेशन किया और बताया कि इससे उनकी आंखों की रोशनी बढ़ जाएगी. लेकिन डॉक्टर की सभी सलाहों का पालन करने, दवाइंया लेने और समय-समय पर चेकअप कराते रहने के बावजूद कोई सकारात्मक परिणाम नहीं निकला.

करीब दो माह बाद दाई आंख का दोबारा आपरेशन किया, लेकिन इससे भी कुछ नहीं हुआ. धीरे-धीरे उनकी आंखे और खराब होती चली गई. बाद में जिन दो डॉक्टरों के पास उन्हें भेजा गया, उन्होंने बताया कि उनका रेटिना खराब हो चुका हैं और आंखों की रोशनी पूरी तरह जा चुकी हैं.

अब अपनी आंखे खराब होने के लिए डॉक्टर श्याम कुमार को दोषी बताते हुए रमेश भाई ने उपभोक्ता अदालत में शिकायत दर्ज करा दी और पांच लाख रुपये के हर्जाने की मांग की. इसके जवाब में डॉक्टर ने तर्क दिया कि मरीज की आंखों की रोशनी उनकी लापरवाही से नहीं गई हैं. उसने कहा कि मरीज की आंखें काफी खराब थी और डॉक्टर के भरपूर प्रयास के बावजूद उनमें कोई सुधार नहीं हो सका. अपने फैसले में जिला उपभोक्ता अदालत ने डॉक्टर को लापरवाही के लिए दोषी ठहराया और १२ फीसदी ब्याज सहित १.८५ लाख रुपये मरीज को अदा करने का आदेश दिया. बाद में राज्य आयोग और राष्ट्रीय आयोग ने भी यह व्यवस्था दी.

इस मामले में उपभोक्ता अदालतां ने रमेशभाई द्वारा पेश साक्ष्यों पर गौर करते हुए अपने फैसले सुनाए और डॉक्टर को लापरवाही का दोषी ठहराया. इसके मुख्य रुप से दो कारण थे. पहला यह कि अगर मरीज की आखे वाकई बहुत ज्यादा खराब थी और ऑपरेशन से भी उनके ठीक होने की कोई गारन्टी नहीं थी, तो डॉक्टर को यह जानकारी मरीज को देनी चाहिए. ऐसा न कर उसने मरीज के सूचना के अधिकार के खिलाफ काम किया. दूसरा, डॉक्टर ने अदालत में जो तर्क दिए वह साबित नहीं कर सका, क्योंकि उसने रिकार्ड नष्ट कर दिये थें. रिकॉर्ड नष्ट करने के बारे में डॉक्टर का तर्क था कि मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया के निदेर्शो के मुताबिक डॉक्टरों को तीन साल तक पुराने रिकार्ड ही रखने चाहिए.

सर्वोच्च उपभोक्ता अदालत ने कहा कि मरीज की स्थिति के बारे में उसे जानकारी न देकर डॉक्टर ने अपनी ड्यूटी में कोताही की. मरीज की उसकी बीमारी, उपलब्ध विकल्पों और इलाज के जोखिम के बारे में विस्तृत जानकारी देना डॉक्टर की ड्यूटी हैं.

साहित्यकारों/सदस्यों के लिए

1.पत्रिका के लिए लेख तथा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेज़ें. फोटो अथवा कार्बन कापी स्वीकार्य नहीं हैं. प्रकाशन सामग्री पत्रिका के अनुकूल होनी चाहिए. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें. एक बार में एक ही रचना भेजें. रचना की वापसी के लिए टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूलें. अन्यथा अस्वीकृति के संदर्भ में वापसी संभव न होगी.

2. किसी पर्व/अवसर विशेष पर सामग्री दो माह पूर्व भेजें.

3.पुराने सदस्य पत्र व्यवहार व धनादेश भेजते समय सदस्य संख्या का उल्लेख अवश्य करें.

3. हम साहित्यकारों को फिलहॉल कोई मानदेय नहीं देते. केवल उपहार स्वरूप दो प्रतियॉ ही भेजते हैं जिसमें उनकी रचनाएँ छपी होती हैं. भविष्य में कुछ मानदेय देने की योजना विचाराधीन हैं. लेकिन वह मांगी गयी सामग्री पर ही देय होगी.

4.यदि आप अपनी कृति (काव्य संग्रह, ग़ज़ल संग्रह, कहानी संग्रह, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु0 100/—का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें

धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डी.डी 'संपादक, विश्व स्नेह समाज' के नाम से भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

जरा हंस दो मेरे भाय

☠ किसान (मनोचिकित्सक से)-आजकल मैं बुरे-बुरे ख्वाब देखता हूँ. रात मैंने देखा कि मैं बैल बन गया हूँ और घास चरने लगा हूँ.
मनोचिकित्सक (किसान से)-ख्वाब आखिर ख्वाब हैं. इसमें परेषानी की क्या बात है?
किसान (मनोचिकित्सक से)- लेकिन, सुबह जब मेरी आंख खुली तो पता चला कि मैंने अपनी आधी चटाई चबा डाली हैं.

☠ पत्नी (पति से)-आज आप बहुत देर से घर आए.
पति (पत्नी से)-और तुम इतनी रात तक जाग कर क्या कर रही हों.
पत्नी (पति से)-मैं पांच घंटे से आपके इंतजार में जाग रही थी.
पति(पत्नि से)- और मैं पांच घंटे से इसी इंतजार में बाहर खड़ा था कि तुम सो जाओं मैं अंदर आऊँ.

☠पति (पत्नी से)- आज किसी ने मेरी जेब काट ली.
पत्नी(पति से)-तो पुलिस में रिर्पोट की?
पति(पत्नी से)-नहीं, मैंने गलती कर दी.
पत्नी (पति से)-वह क्यों?
पति (पत्नी से)-जेब कटने के तुरंत बाद मैंने उसे दर्जी से सिलवा लिया.

☠ एक व्यक्ति घर में बैठकर गाना गा रहा था. यह देखकर उसकी पत्नी ने कहा-
पत्नी (पति से)- मेरे पिताजी जब गाते थे तो उड़ते हुए पंछी गिर जाया करते थें.
पति (पत्नि से)-क्या तुम्हारे पिताजी मुंह में कारतूस भर कर गाते थे.

☠षराब के नषे में डूबे हुए पति से पत्नी ने कहा- क्या कहा,
तुम मुझे पहचान नहीं रहे हो, मैं तुम्हारी बीबी हूँ.
इस पर पति ने लड़खड़ाती जुबान में कहा-जानम, षराब पीकर हम सभी गम भूल जाते हैं.

☠पत्नी (व्यापारी पति से)-हमारी बेटी अब षादी लायक हो गई हैं.
पति (पत्नी से)-कितने साल का लड़का देखूं.
पत्नी (पति से)-हमारी बेटी १८ साल की है, तो लड़का कम से कम २० साल का तो होना चाहिए.
पति (पत्नी से)-अगर २० साल का सही लड़का न मिले तो क्या दस-दस साल के दो लड़के ले आऊं.

☠ पत्नी (पति से)-मैने दुनिया की सबसे खूबसूरत महिला को देखा, उस पर वो कपड़े खूब फब रहे थे.
पति (पत्नी से)-अच्छा फिर?
पत्नी (पति से)-फिर क्या? मैं आईने के सामने से हट गई.

☠ पत्नी (पति से)-यह लीजिए, बालो को मजबूत करने वाले तेल की षीषी.
पति (पत्नी से)-पर मेरे बाल तो झड़ते ही नहीं.
पत्नी (पति से)-ये आपके लिए नहीं, आपकी सेक्रेटरी के लिए हैं.

☠डॉक्टर(मरीज से)-घबराइए नहीं, जिदंगी तो ऊपर वाले के हाथ में होती हैं.
मरीज (डॉक्टर से)-तो क्या आपके हाथ में कुछ भी नहीं हैं.
डॉक्टर (मरीज से)-हैं क्यों नहीं. दवा लिखना और फीस लेना.

☠डॉक्टर(नर्स से)-मैंने यह ऑपरेषन ठीक समय पर कर दिया वरना.....
नर्स (घबराकर डॉक्टर से)-वरना क्या? क्या रोगी मर जाता?
डॉक्टर (नर्स से)-नहीं, कुछ देर और ऑपरेषन न करता तो वह बिना ऑपरेषन किए ही ठीक हो जाता.

☠संता (बंता से)-तुम्हारे दांत कैसे टूट गए?
बंता (संता से)-हंसने के कारण.
संता (बंता से)-क्या मतलब?
बंता (संता से)-हां यार, कल मैं एक पहलवान को देखकर हंस पड़ा था.

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हींग, राजरानी मीट मसाला,

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफत

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त दिए जायेंगें.

पुस्तक समीक्षा

तीखे तेवर की उजागर कोशिशः धूम मचाले धूम

हमारे देश में कविता की वाचिक परम्परा बहुत पुरानी हैं, शायद तभी से, जब से कि कविता का आरंभ हुआ है. कवि समुदाय में, कभी राजसत्ता की प्रशंसा में, तो कभी धार्मिक आयोजनों में अपनी रचनाएँ सुनाता था और लोग उससे तादात्म्य जोड़ते हुए आनन्द का अनुभव करते थें.

शताब्दियों से चली आ रही वाचिक परम्परा आज भी कवि सम्मेलनों के रुप में लोकप्रिय हैं. श्री जगन्नाथ 'विश्व' इसी परम्परा के ख्यातिप्राप्त और दमदार कवि हैं. 'धूम मचाले धूम' उनकी कविताओं का नया संकलन है. इससे छोटी-बड़ी कविताओं में कुल मिलाकर नौ फिल्म पैरोडियॉ, आठ हिन्दी, एक राजस्थानी, एक मालवी ग़ज़ल, एक अगेय व्यंग्य, तथा एक सौ चार दोहे सम्मिलित हैं. अधिकांश रचनाओं से ज्ञात होता हैं कि ये साहित्य के साथ-साथ मंच केन्द्रित भी हैं. जैसा कि नाम से स्पष्ट हैं-ध् ूम मचाना इसका लक्ष्य हैं. इसमें राजनीति की विकृतियों को सीधे-सीधे किन्तु तीखे तेवर के साथ उजागर करने की कोशिश है. राजनीति कहॉ से कहॉ आ गई है, नेतागण कितने पतित हो गये हैं, चोरी और सीना जोरी का बोलबाला है, जनता बेबस हैं, त्रस्त हैं, यही इन रचनाओं में व्यक्त हुआ है-

पहले तो ये हाथ जोड़कर
वोट की गिनती करता है
जीत गया तो चौबिस घण्टे
नोट की गिनती करता है
पांच साल में घर भर लेता,
काले धन कुचालों से.

ऐसे दुष्चक्रों से समाज में विसंगतियॉ उभर आई हैं, उचित-अनुचित का क्रम उलट सा गया है-

लक्ष्मी देवी जम गई उल्लुओं के द्वार,
डिग्री लेकर पढ़ा-लिखा घूम रहा बेकार

संकलन की 'हिसाब दीजिए' कविता मं एक अच्छा प्रश्न भी उठाया गया है-

बेकल बहार हुई कौन सुनेगा, खुशबू फरार हुई कौन सुनेगा? संसद बीमार हुई कौन सुनेगा, ऑसुओं की धार हुई कौन सुनेगा?

तानाशाहियों को बेनकाब कीजिए. देश की बर्बादी का हिसाब दीजिए।

प्रस्तुत संकलन की कविताओं में वर्तमान समय की विसंगतियों और विडम्बनाओं से रुबरु होते हुए भी कहीं हरसूद क डूबने का दर्द उभरता हैं, तो कहीं कर्णधारों की अकर्मण्यता के कारण उद्योगों के क्षरण की पीड़ा और चारित्रिक पतन का विक्षोभ भी प्रकट हुआ हैं.

अस्तु, अभिव्यक्ति, मुद्रण, गेटअप आदि में प्रस्तुत संकलन सुन्दर बन पड़ा हैं. मैं आशा करता हूँ कि सहज पाठक समुदाय में इसका स्वागत होगा.

समीक्षकः डॉ. शिव चौरसिया, १३०, विद्यानगर, सांवेर रोड़, उज्जैन, म.प्र.
कृति - धूम मचाले धूम
कवि : जगन्नाथ विश्व,
गरिमा प्रकाशन, नागदा

वातचक्र काव्य संग्रह

कवि की पहचान उसकी लेखनी से ही होती हैं और अगर कविताओं में विविधता हो तो उसकी क्या कहने. प्रस्तुत काव्य ग्रन्थ 'वातचक्र' में ओमप्रकाश बरसैया 'ऊँकार' जी ने सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक एवं राष्ट्रीय भावनाओं की स्पष्ट छाप छोड़ी हैं.

समय परिवर्तनशील हैं. समय के आगे इंसान आत्मसमर्पण करने को विवश हो जाता हैं. कवि की ये पंक्तियां यही व्यां करती है-हवा का होता जभी अभाव,
घूमकर वातचक्र चलतें

शायद इस संग्रह के नामकरण का भी यही दृष्टिकोण रहा होगा. आज के शोषित एवं अशान्त जीवन पर कवि कहता है-

शोषण-साधन बने अपरिमित,
निर्धन फिरते हाथ पसारे।
अश्रुकणों को पीकर बेवश,
चिथड़ों को अंगों पर धारे।।
बोझ ढो रहे भूखे-नंगे,
रोगी तड़पे श्रमिक विचारे।
शिक्षा, स्वास्थ्य बड़े पद विकते,
नेताओं, धनियों के द्वारे।

वर्तमान नागरिकों को प्रगति-पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरणा देते हुए कवि कहता है-*चलना हैं जीवन-पथ में रोओ या गाओ। फूल मिले या शूल, भाग्य से मत घबराओ।* वह परिश्रम का अभिनन्दन करते हुए कहता है- ढह जाते हैं स्वयं एक दिन,
महल जुल्म के निर्बल।
अरे सदा ही मीठा होता,
कठिन परिश्रम का फल।

मंहगाई व मिलावट से त्रस्त जनता की बातों पर कवि कहता है-

मिले दूध में अरारोट अब,
घी में घुइयॉ फिटी हुई है।
सड़े हुए आटे को पाने,
कैसी लाइन लगी हुई हैं.

ईमानदार व्यक्तियों की दुर्दशा को व्यां करते हुए-सच्चे सीधे योग्य ठोकरें,
खाते मानो नाकाबिल हैं।
छक्के पंजे उनके हैं,
जो नाकाबिल लुच्चे कातिल हैं।

धर्म के नाम पर हो रहे भ्रष्टाचार व चन्दे पर कवि कहता है-तीर्थो में पण्डा जी लूटें,
घर में अभ्यागत जी लूटें।
रस्ते-रस्ते हाथ बढ़ाते,
भिखमंगे गृहस्थ को लूटें।
कोई चन्दे के धन्धे से,
मेहनतश की खाल खींचता।
कोई गर्ज पड़े डोनेशल ले,
दिखलाता महा नीचता।।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट हैं कि कवि आज की परिस्थितियों व समाज के वर्तमान ढ़ाचें से त्रस्त हैं.

समीक्षकः डॉ. सियाराम शरण शर्मा
कविः डॉ. ओमप्रकाश बरसैया ऊँकार १६, जवाहर चौक, झांसी, उ.प्र.
प्रकाशकः उज्जवल प्रकाश, १६, जवाहर चौक, झॅासी, उ.प्र. २८४००२

&&&&&&&&&&&&